SHREE SWAMINARAYAN

શ્રી સ્વામિનારાયણ

MARCH 2005

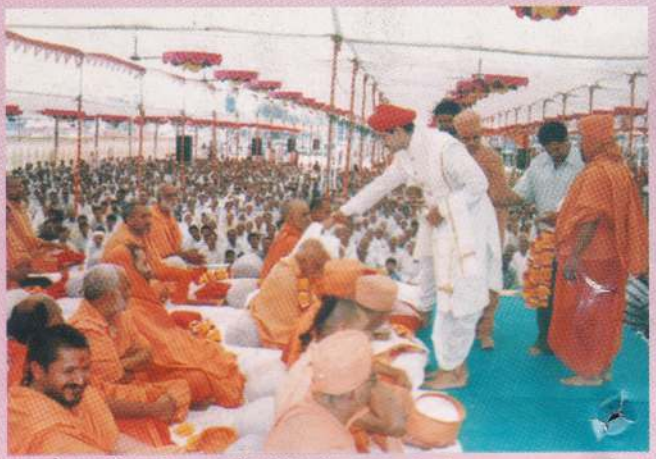


બાપુનગર - એપ્રોચ મૂર્તિ પ્રતિષ્ઠા પ્રસંગે પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રી ના આશીર્વચન

પ્રકાશકઃ- શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, અમદાવાદ-૧
Publisher:- Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad-1



एप्रोच मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पारायण के वक्ता महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी को पुष्पहार पहनाकर आशीर्वाद देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री।



एप्रोच मंदिर की सभा में संतो को दुपट्टा ओढाते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।





श्री स्वामिनारायण मंदिर (एप्रोच) में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर विशाल सत्संग सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा मुख्य मेहमान (मुख्य अतिथि) के स्थ में आये हुए माननीय राज्यपाल श्री नवलकिशोर शर्माजी ।





श्री नरनारायणदेव पीठ स्थान का मुखपत्र

SHREE SWAMINARAYAN

श्री स्वामिनारायण

वर्ष - ४ मार्च -२००५



संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री

दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स
०७९-२७४५२१४५

तंत्रीश्री
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)

पत्रिका (मासिक अंक) मूल्य
वंशपारंपरिक
देशमें ५०१-००
विदेश $ 100
प्रति कोपी ५-००

प्रकाशन समय
प्रति माह (मास) की दिनांक ११ को
गुजराती, हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषामें

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.

हिन्दी अनुवादक
डॉ. वाचस्पति मिश्र (प्रधान पंडित)
श्री स्वामिनारायण मंदिर, अहमदाबाद

अ नु क्र म णि का

१.	अस्मदीयम	२
२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके शुभ कार्यक्रमोकी रुपरेखा	३
३.	श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से	५
४.	पू. महाराज श्री द्वारा महाराज की सत्तावाही आवाज	७
५.	बापूनगर मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव अंतर्गत श्रीमद् भागवत पारायण आधारित बीने गये मोती	९
६.	एक अनुपम पत्र-निरुपण	१२
७.	राजस्थान में उदयपुर जिले के आशीर्वाद समान धरियावद मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव	१४
८.	ब्रह्मचर्य शरीर का सम्राट	१६
९.	विना विचारे न करो	१७
१०.	सत्संग बालवाटिका (१) मोक्ष की चाभी भूलना नहीं	१९
११.	समाचार वृत्तांत	२१

प्रकाशक
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर, अहमदाबाद-१.
दूर ध्वनि : २२१३२१७०, २२१३६८१८. फेक्स : २२१७६९९२.
Visit us : www.swaminarayan.info
E-mail : snndmandir@india.com
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल कार्यालय : २२१६६७६७

अस्मदीयम्

तन्त्रीश्री की तरफ से.....

जीवात्मा को ऐसी सुन्दर मनुष्य शरीर भगवान ने जीवात्मा के मोक्ष के लिए दिया है। परंतु जीव संसार के भूल भूलैया में अपनी शरीर को नाशवंत विषयों के भोग में लगा देता है। यही सबसे बड़ाजीव का अज्ञान है। श्रीजी महाराज ने शिक्षापत्री में जो नीति नियमों की मर्यादा बनायी है उसके अनुसार वर्तन करने से तथा भगवान श्री स्वामिनारायण में दृढ आश्रय रखने से जीव का आत्यन्तिक मोक्ष सम्भव है। यही बात श्रीहरिने अपने वचनामृत में स्पष्ट कहा है। आश्रय के विना बड़-बड़े साधनो से भी विषय को जीतना अति कठिन है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, माया, इस जीव को बारंबार जन्म मृत्यु के फेरे में फंसादेती है। अन्तः शत्रु बड़े-बड़े ज्ञानियों को भी मोक्ष मार्ग से गिरा दिये हैं। तो इस क्षुद्रजीव की क्या बात है। लेकिन जिसे भगवान श्रीहरिकी शरणागति है, या भगवान नरनारायणदेव का जिन्हे दृढ आश्रय हो गया है वे निश्चय ही अन्तः शत्रुओं को जीत लेते हैं। श्रीहरिने गढडा प्रकरण के ८ वे वचनामृत में इसी प्रकार की बात की है। जो श्री नरनारायणदेव की उपासना करते है उन्हें इस ब्रह्मांड में जितनी देवांगना हैं अथवा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की जितने भी आकर्षक पदार्थ हैं वे मोह से मुग्ध नहीं कर सकते।'' यह वचन हम सभी के लिए श्रीहरि का वचन है। जिन्हे इन वचनों में विश्वास है उनकी रक्षा करने वाले स्वयं श्रीहरि हैं। इसलिये भगवान श्री नरनारायणदेव का ही दृढ आश्रय रखकर मोक्ष के साधन स्म श्रीहरि की प्रसन्नता प्राप्त कर लेनी चाहिए। यही मनुष्य देह की सार्थकता है। यही मानव देह का कर्तव्य है।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)

– शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का

जयश्री स्वामिनारायण



प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ कार्यक्रमों की रुपरेखा

जनवरी - २००५

१. श्री स्वामिनारायण मंदिर बीलिया में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण । वहाँ से प.भ. धीरजकुमार कांतिलाल ठक्कर के यहाँ पदार्पण ।
२. श्री स्वामिनारायण मंदिर बीलिया में नूतनमंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने वरद हाथों से की ।
३. जामसर (हालार मूली देश) श्री हनुमानजी मंदिर की खातपूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
४. श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण । वहाँ प.भ. ईश्वरलाल अम्बालाल भावसार के यहाँ पदार्पण ।
५. प.भ. बंशीलाल हिंमतलाल बावडा के यहाँ पदार्पण, नवरंगपुरा ।
६. श्री स्वामिनारायण मंदिर चांदखेडा पारायण की पूर्णाहुति अपने हाथों से की ।
श्री स्वामिनारायण मंदिर जीवराजपार्क शाकोत्सव अपने वरद हाथों से किये ।
७. श्री स्वामिनारायण विश्वमंगल गुरुकुल कलोल पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. लधारामभाई पटेल के यहाँ पदार्पण सिंगरवा ।
८. श्री स्वामिनारायण मंदिर नागडावास जूना (मूलीदेश मोरबी) मूर्ति प्रतिष्ठा अपने वदह हाथों से किये ।
९. श्री स्वामिनारायण इडर में पदार्पण ।
१०. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेडा (कड़ी) मूर्ति प्रतिष्ठा, विष्णुयाग, अपने वरद हाथों से किये ।
प.भ. नरेशभाई कनुभाई व्यास के यहाँ यज्ञोपवीत प्रसंग पर आशीर्वाद देने के लिए पधारे ।
प.भ. राजूभाई प्रहलादभाई ठक्कर के यहाँ वास्तुपूजन प्रसंग पर पदार्पण सेटेलाईट ।
११. प.भ. प्रविणभाई रतीभाई पटेल के यहाँ कथा पारायण प्रसंग पर पदार्पण, सेटेलाईट ।
१२-१३. सुखपर (कच्छ) नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा स्व हाथों से ।
१४. श्री स्वामिनारायण मंदिर नांदोल (ता. दहेगाम) मूर्ति प्रतिष्ठा अपने हाथों से करके प.भ. चतुरदास मोहनदास साणोद के यहाँ पदार्पण । प.भ. मधुभाई छगनभाई वेकरिया के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
१५. श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच बापूनगर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित शोभायात्रा में पदार्पण ।
१६. एप्रोच बापूनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर (शिखरबद्ध) में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने हाथों से ।
१७. टोरडा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव के अवसर पर पदार्पण ।
१८. नारायणपुरा श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव तथा नूतन (बहनो के) मंदिर की प्रतिष्ठा स्व हाथों से की ।
१९-२०. धरियावद (जि. उदयपुर, राज.) शिखर बद्ध मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा अपने हाथों से की ।
२१. श्री स्वामिनारायण मंदिर मोखासण पारायण की पूर्णाहूति प्रसंग पर पदार्पण । कलोल श्रीनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में पाटोत्सव अवशर पर पदार्पण । भाऊपुरा (कलोल) गाँव में श्री दूधेश्वर महादेव की प्राण प्रतिष्ठा स्वहाथों से किये ।
२२. अ.नि. प.भ. पुरुषोत्तमदास रामदास पटेल पारायण प्रसंग पर पदार्पण, डांगरवा ।
२३. प.भ. कांतिलाल आत्माराम सुथार के यहाँ पदार्पण, निर्णयनगर ।
प.भ. योगेशकुमार शंकरलाल पटेल के यहाँ पदार्पण, राणीप ।
२४. एक हरिभक्त के यहाँ पदार्पण, मेघाडीनगर ।
२५. वासणा पालडी अहमदाबाद में शिखर बद्ध मंदिर मे खात पूजा विधि अपने हाथों से किये ।
२६. श्री स्वामिनारायण मंदिर मेउ पाटोत्सव तथा शाकोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
प.भ. ठाकोरलाल नटवरलाल सोनी के यहाँ महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
२७. श्री स्वामिनारायण मंदिर लींबडी पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२८. लूणावाडा श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।

सभी सत्संगी को जरुरी सूचना

सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्पष्टता पूर्वक अपने सभी आश्रितो को आज्ञा की है की अपनी आमदनी का दशवा भाग अपने देश विभाग के आधार पर अपने देश विभाग के देव को अर्पण करना चाहिए ।

केवल संस्थाये, गुरुकुल या मंदिरो का निर्माण तथा किसी भी स्थान में दान करना हो तो धर्मादा में कमी करके दान नही देना चाहिए । अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव की गादी के आश्रितोको श्री नरनारायणदेव के कोठार में ही अपना धर्मादा (रुपया, अनाज इत्यादि) जमा कर प्राप्ती रशीद जरुर से प्राप्त करले ।

सर्वावतारी श्रीहरि की ईच्छा से अपना संप्रदाय देश विदेश में बहुत विस्तृत और व्यापक बनता जा रहा है । दाताओ कई बार कहाँ दान देना वो पता नही रहेता इसलिए दान का प्रवाह दूसरी संस्था की तरफ मुड गया है । इसलिए दाताओ को सूचन है की दान के लिए योग्य मार्गदर्शन प.पू. आचार्य महाराजश्री के पास से प्राप्त कर योग्य जरुरत वाले मंदिर, संस्था, गुरुकुल इत्यादि को मिले ।

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से

संकलन - गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

अपना कोई भी उत्सव हो या सभा हो, अपने विद्वान संत अपनी विद्वता पूर्ण शैली में प्रासंगिक सभा का उद्‌बोधन करते है, जिससे मन प्रफुल्लित हो जाता हैं। फिर भी पूर्ण तृप्ति तो तब होती है जब प.पू. महाराजश्री अपनी अमृतमयी वाणी से आशीर्वचन देते है।

(१) ता. २७-१-०५ जमियतपुरा (प्रभा हनुमानजी) में श्री स्वामिनारायण भगवान की मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर - शास्त्रो के अन्दर हनुमानजी महाराज को बुद्धिनाम ग्रगण्यम् कहा गया है। जगत में सभी के पास बुद्धि होती है, लेकिन वह बुद्धि भगवान के लिए नहीं लगाई जाय तो वह बुद्धि काम की नहीं। वही बुद्धि वही जीवन श्रेष्ठ है जो भगवान के काम में आवे, वहीं पर भगवान का स्थायी निवास रहता है। भगवान को लाने का पुस्मार्थ नहीं करना पडता है। भगवान तो स्वयं आते हैं। प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजने हनुमानजी की प्रतिष्ठा की और हनुमानजी महाराज जब भगवान को वस में करके रखते हों तो भगवान को आना ही पडता हैं। आज यहाँ पर श्रीजी महाराज विराजमान हो गये हैं। क्योंकि हनुमानजी महाराज यहीं विद्यमान हैं। विल्डिंग इसमें कारण नहीं है हनुमानजी हैं जो भगवान को यहाँ खींच लायें हैं।

हमें इतना ही सीखना है कि हमारी भजन, भक्ति यथार्थ हो रही है या नहीं, कोई कोम्लीकेशन न हो तो महाराज को आना ही पड़ता है। महाराज में जितना प्रेम, जितनी पहचान जितनी सन्नकिटता या चाहना रहे उतना ही अच्छा है, यही जीवन की सार्थकता है, यही हमारी धन-सम्पत्ति है।

वचनामृत में योगानन्द स्वामीने महाराज से पूछा कि, हे महाराज ? हम



बैढते तो आपके सामने हैं और आपके प्रतिनिष्ठा भी है, प्रेम भी है तो भी कथा सुनने में मन क्यों नहीं लगता है। इसका क्या कारण है ? महाराज ने कहा। भगवान जैसे है वैसी पहचान अभी तक हो नहीं पाई है। इसी लिए मन भगवान में लगता नहीं है। जगत के पदार्थो में मन लग जाता है। भगवान की पहचान हो गयी हो तो जगत का व्यवहार प्रतिबन्धित नहीं कर सकता है। जिसके प्रांगण में बैठे हैं वे भगवान की खूब सेवा किये है, जितने अवतार हुए है उन सभी की सेवा किये है। भगवान की सेवा में तत्पर रहते हैं।

हमें भी यही सीखना हैं कि - मन, कर्म, वचन से महाराज का बने। भगवान की सेवा, प्रसन्नता किस प्रकार मिले यही सीखना है। यही सम्पत्ति है। यही बैंक बैलेन्स है, जितना भगवान के लिए होगा, सच्ची निष्ठा होगी वही जमा होता जायेगा, वही काम में आयेगा। प्रत्येक हरिभक्त को अपने-अपने ढंग से सेवा करनी चाहिए। घनश्याम स्वामी के मंडल ने इस वियावान स्थळ को हरियाली से भर दिया है। कारण यह कि यह मंडल पुस्मार्थी है। इस के साथ जो भी भगवान को आगे रखकर चलेगा वह आगे बढता ही रहेगा। आप सभी भगवान की भजन-भक्ति को आगे रखना। जितना पूजन, भजन, भक्ति, सेवा इत्यादि महाराज की आपलोग करेंगे उनता ही महाज आप सबका ध्यान रखेंगे। कोई मरकर साथ में कुछ ले नहीं जाता है सब यहीं रहने वाला है। ट्रावेलिंग के समय एकबार एरपोर्ट पर ३-४ घन्टा विताना था उस समय देखा तो किसी को शांति नहीं थी।

एक साधु बाबा एक राजा के दरबार में गया। चौकीदार को कहा मुझे यहाँ रहना है। चौकीदार ने कहा कि यह पागल लगता है। राजा के दरबार को यह धर्मशाला समझ रहा है। इसे यहाँ से भगा दो। साधु ने कहा हमें रहना है। चौकीदार एकत्रित होकर धक्का मारकर बाहर करने लगे। उसी समय राजा को इसकी खबर मिल गयी।

राजा की आज्ञा से चौकीदार राजा के पास ले आये। बाबा ने का मैं अन्दर रहना चाहता हूँ। राजा हंसने लगा। और कहा कि यह तो मेरा महल है। बाबा भी

हंसने लगा कि यह तुम्हारा महल ? १० वर्ष पूर्व तुम इस गद्दी पर थे ? राजा ने कहा उस समय मेरे पिता गद्दी पर थे । अब उनके निधन के बाद मैं गद्दी पर बैठा हूँ । बाबाने कहा ३० वर्ष पूर्व कौन था ? तब राजाने कहा मेरे दादा थे उनके निधन के बाद मेरे पिता राजा बने । बाबा ने कहा १० वर्ष के बाद हम पुन: आयेंगे तब तूं इस गद्दी पर नहीं रहेगा । यह किसी की नहीं है । यह धर्मशाला है । कोई नित्य नहीं है । सत्ता का अन्त आता ही हैं । केवल भगवान सत्य है, उन्ही की सत्ता है । पोटला बांधकर, मेहनत करके मर जायेगा तो भी कुछ होने वाला नहीं है । भगवान मिले हैं । सत्संग मिला है, इस मूली को कभी छोड़ना नहीं । सत्संग से सद् विचार, संस्कार आता है । इसलिए सत्संग की बुद्धि करना । कुटुम्ब, समाज, बेटा, बेटी, सभी में सत्संग रहेगा तो ही सभी सुखी रह सकते हैं । भगवान की पहचान से ही सुखी होना सम्भव है । यही सच्ची सम्पत्ति है । दादा के सानिध्य में महाराज ऐसी सम्पत्ति एकत्रित करने की शक्ति दें जिससे दिनप्रतिदिन सत्संग की परम्परा चलती रहे । ऐसी प्रभु को प्रार्थना ।

(२) ता. १६-२-०५ बापूनगर एप्रोच मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंग पर : महाराज ने वचनामृत का आरम्भ किया, उसमें महाराज ने कहा कि कठिन से कठिन वस्तु क्या है ? भगवान की मूर्ति का सतत स्मरण रखना, भगवान की मूर्ति का अखंड ध्यान करना । इससे बड़ा कठिन कोई साधन नहीं है । इससे बड़ी कोई प्राप्ति भी नहीं है । करने लायक कोई वस्तु हो तो जीव को भगवान के साथ जोड़ना । संसार में दूसरा सब कुछ होता है । बाप, मां, बेटा, बेटी, बहन, फूआ, मौसा, मौसी, मामा इत्यादि, परंतु भगवान के साथ जीव का सम्बन्ध नहीं होता है । मनुष्य का जन्म हुआ है तो इसी जन्म में देह गेहका भान भूलकर जीव का कल्याण कर लेना चाहिए । अपनी बड़ भाग्य है कि सुंदर सत्संग मिला है । भगवान के धाम के सुख की प्रतीति होती है । महाराज की मूर्ति चिन्तामणी के समान है । जो जो विचार करें वह सभी मिल जाता है । अंत: करण मन कभी उत्तम संकल्प नहीं करता ।

एक मुसाफिर कल्प वृक्ष के नीचे आराम कर रहा था । उस समय उसके मन में विचार आया कि सुन्दर खाने पीने को यहाँ मिल जाय तो कितना अच्छा होता, उसे ऐसा विचार आया कि सभी खाद्य सामग्री नाना प्रकार के व्यञ्जन के साथ उपलब्ध हो गयी और पानी पीने के लिए आ गया । बाद में ऐसा विचार हुआ कि भोजन कर लिया हूँ सोने की सभी सामग्री आजाय तो शयन की सभी सामान, पलंग, तकिया, गद्दा इत्यादि सभी आ गया और ४-५ घन्टे सो गया बाद में उठा तो मन में पुन: संकल्प हुआ कि कदाचित वृक्ष की डाल मेरे ऊपर गिरे तो मैं मरजाउं । इतने में एक मोटी डाल ऊपर से गिरी और वह मर गया । यह तो था कल्पवृक्ष इसके नीचे बैठकर जैसा विचार आवे वह पूर्ण होता है । यही बात शाकोत्सव की सभा में भी की थी किजो कोई जैसा भाव लेकर आता है उसे वैसा ही मिलता है । अच्छा संकल्प होगा तो अनहद सुख मिलेगा । खराब संकल्प होगा तो दु:ख मिलेगा । किसी के मन में ऐसा भी हो सकता है कि इस सत्संग में ऐसा चलना वैसा चलना है । इस सत्संग में जाने लायक नहीं है । लेकिन भगवान तक पहुंचने के लिए सत्संग करना, भक्ति करना श्रेयष्कर है । सत्संग के बल से मन दृढ होता है । किसी को माला फेरते हुए देखते हैं, किसी को भजन करते हुए कीसी को सेवा करते हुए देखते है तो स्वयं के मन में भी होता है ऐसा हम भी करें । महाराज ने शास्त्र बनाया, यदि इतने समृद्ध शास्त्रों को प्राप्त करके भी हम धर्माचरण से विहीन होते हैं तो यह हमारी कमजोरी है न कि महाराज की । पिता बालक का प्रथमावस्था में ध्यान रखता है, जब बडा हो जाता है तब उसे उन्मुक्त छोड़ देता है । बाद में बेटा बाप का ध्यान रखता है । इसी प्रकार महाराज ने भी हम सभी का ध्यान रखने में कोई कमी नहीं किया है । दतुअन कैसे करें, यह भी महाराज ने बताया है । अब तो महाराज का ध्यान हमें रखना है । अब हमारा उत्तरदायित्व बढ गया है । महाराज को प्रतिष्ठित किये हैं इन की देखभाल करना हमारा कर्तव्य है । कथा सुनलेने से पूर्ण नहीं हो जाता है । बल्कि प्रारम्भ होता है । हर समय भगवान के प्रतिध्यान रखना चाहिए दिव्यभाव भूलना नहीं चाहिए । इस मूर्ति में तथा धाम की मूर्ति में जो फर्क समझे उसे सत्संग का रस लगा ही नहीं. मंदिर की मूर्ति में न्यूनता दिखाई दे, कमी दिखाई दे तो समझना चाहिए की उसे सत्संग नहीं मिला है । मूर्ति धाम का एक स्वरूप है । इसमें कोई फर्क नहीं है । ऐसा जानकर जो

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १५

पू. महाराज श्री द्वारा महाराज की सत्तावाही आवाज

- गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

प्यारे बन्दनीय भक्तजन । जीव के सच्चे सम्बन्धी । श्री नरनारायणदेव देश गादी अभिषेक विशेषांक में कल्पना से अधिक अच्छा अच्छा वांचने के लिए मिला । अपने सदग्रन्थोमें महाराज का अगाध दिव्य तथा मानुषीलीला चरित्र का वांचन, चिंतन, मनन, श्रवण कर के भाव समाधि में डूब ही जाते हैं । परंतु वही महाराज हाल में विद्यमान आचार्य के स्म मे जो लीला कर रहे हैं, जो कार्य कर रहे हैं वह सभी मात्र स्वामिनारायण मासिक द्वारा ही बांचा जा शकता है । देव, आचार्य में जितनी जिसकी प्रतीति, जितनी जिसकी भावना उतना श्रीजी महाराज उस जीवात्मा को सुख देते हैं। रामचंद्रभगवान के समय में या श्रीकृष्ण भगवान के समय में या आज से केवल सवा दो सौ वर्ष पूर्व श्री स्वानिनारायण भगवान के समय में इस पृथ्वी पर करोडो मनुष्य थे । परंतु उन-उन समयों में जितना जिसने स्वस्म को पहचाना है उतना उसे सुखप्राप्त हुआ है। इतना ही नहीं परंतु अंतकाल में यमयातना तथा चौरासीलाख के भयंकर चक्कर में से छूट गये हैं । बाकी के मनुष्य उस समय कुछ खेत जोतते रहे, कोई नौकरी करते रहे, कोई व्यापार उद्योग धन्धा करते रहे । उसमें से समय मिलता तो कुसंग करते थे । परंतु महाराज के स्वस्म को भगवान मानकर एकबार भी दर्शन करने के लिए गये नहीं जिससे सदा के लिए जन्म मरण के भवाटवी में भटकते रहे ।

श्रीजी महाराज ने इस पृथ्वी पर पदार्पण करके इतना अद्भुत कार्य किया है कि वह लिखा नहीं जा सकता । महाराज इतने दयालु कि महाराज को ऐसा हुआ कि पृथ्वी पर ऐसा कोई मुमुक्षु न रहे जिसे मोक्ष की चाहना हो और वह मोक्ष के विना रहजाय । इसलिये भगवान जबतक वृथ्वी रहेगी तब तक स्वयं स्थापित सत्संग में देव, आचार्य संत तथा शास्त्र के स्वस्ममें प्रत्यक्ष विराजमान रहेंगे ओंर मुमुक्षुओं का कल्याण करेंगे । कलियुग के मनुष्यों के वाक्य हैं कि "समय नहीं" है । अरे भाई तुम्हारे पास समय तो पूर्ण है । लेकिन तुम्हे मोक्ष की चाहना नहीं है । यदि तुम्हे मोक्ष की चाहना नहीं तो भगवान को भी तुम्हारे लियें समय नहीं है । खुद अखंड ब्रह्मांड के अधिपति हैं । तूं एक डग भी उनकी तरफ चलेगा तो, तुम्हारे सामने हजार पग आगे आयेंगे । परंतु तुम्हे इस नित्य सुख की चाहना नहीं हैं और संसार का सुख तुम्हे अनुकुल हो गया हैं तो महाराज तुम्हे क्यों डिस्टर्ब करेंगे । महाराज तो अपने भक्तो के सुखके लिए यह सत्संग स्मी बगीचा को खिलाये हैं । कांटा बिना वृक्ष का यह बगीचा हैं।

अब मूळ बात पर आते हैं । संत तथा निष्ठावान भक्त सभी ने पूर्व के विशेषांक में अपनी अपनी अनुभूति प.पू.महाराजश्रीके विषयमें खूब लिखे। मैंने तो केवल पूज्य महाराज श्री की अमृतवाणी लिखी । बाद में विशेषांक बाचने के बाद मुझे असंतोष हुआ कि कुछ अनुभूति डरवश विशेषांक में नहीं लिखा । परंतु अन्य लेखकों की अनुभूति को बांचकर कुछ हिम्मत हुई है जिसे यहां लिख रहा हूं ।

इ.स. २००२ की साल में भाद्रपद महीना था । शरद ऋतु अर्थात् रोग का समय । मेरी धर्म पत्नी को एकबार प्रातः स्वप्न आया कि मैं धाम में चला गया हूं । प्रातः उठकर उसने इस स्वप्न की बात की । मुझे ऐसा हुआ कि अभी तो मेरी शरीर में कुछ हुआ तो नहीं है । परंतु स्वप्न साकार हो जाय तो ? बाद में ३ ४ रात्रिमें मुझे स्वप्न में प.पू. महाराज श्री का तथा मेरी पत्नी को प.पू.महाराज के साथ प.पू. गादीवालाश्री का दर्शन हुआ । बादमें मुझे बुखार सर्दी खांशी इत्यादि रोग के चिन्ह दिखाई देने लगे । रोग कुछ अधिक दिखाई देने लगा तो डाक्टर को बताया । पूरी शरीर का चेकप हुआ। १९९२ में इसी प्रकार की बिमारी आई, उस समय भी मेडिकल ट्रीटमेन्ट के साथ अखंड "स्वामिनारायण" महामंत्र के जप स्मरण के साथ बिमारी काबू में आगयी । इस समय बिमारी गंभीर स्म में थी । ट्रीटमेन्ट प्रारम्भ हो

गया । देखते देखते शरीर बिलकुल अजलस्त हो गयी । बोलने की शक्ति न रही । लगातार स्वास चलने लगी । स्वप्न साकारहो जायेगा ऐसी प्रतीति होने लगी । इसलिये मैंने अपने मित्र को तथा भाई को टूटती आवाजमें गंभीरता की बात कहीं । किंतु टेलीफोन से अपने सम्बन्धियों को मेरी बीमारी की बात कह देना । यदि मैं प्रातः काल तक जीवित रहा तो मेरी अंतिम इच्छा एक है कि भगवान नरनारायणदेव तथा पूज्य महाराजश्री का दर्शन करलूं। हृदय में एक ऐसी भावना थी कि प.पू. महाराजश्री का दर्शन कर सकूं । उनसे किसी विशेष प्रकार का आशीर्वाद मिल सकेगा ।

प्रातः हुआ मेरा भाई और मित्र सभी भगवान श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके प.पू. महाराजश्री का दर्शन करने गये । दर्शन करके मैंने स्वप्न की बात प्रारंभ की तो महाराज श्री सम्पूर्ण विगत जानकर भगवान की आवाजमें कहे कि अब आप की आयु बढ गयी हैं । चिन्ता मत करना । उससमय ऐसी दिव्य अनुभूति हुई कि मानो श्रीजी महाराज स्वयं बोल रहे हों ।

"अमे एमां ए छे अम ये भाई रे,
एम समझो सहु बाई भाई रे ।"

अब बताओ कि भगवान को अन्यत्र खोजने की आवश्यकता । निष्ठा पर होकर भगवान में मन को अर्पित करने की केवल देर हैं ।

मैंने कहा बापजी ? यह तो श्रीजी महाराज का नियम है । मैं तो अपने आश्रितों के लिए आपसे आशीर्वाद तथा धैर्य मांगने आया था । पुनः महाराज श्रीने कहा कि ना, ना ऐसा मत बोलिये, आपकी आयु बढ गयी हैं। आपके पास से सत्संग का अभी और कार्य होना हैं । ट्रीटमेन्ट कराना, तबीयत ठीक होजाय इसका समाचार देते रहना । मैंने कहा बापजी ? आप ट्रीटमेन्ट की बात करते है । मेरे पेट में कोई गोली रुकती ही नहीं है । पूरे पूरी गोली बाहर आजा ही है । अत्यन्त कम बोलनेकी जिसकी आदत है (स्वभाव है) । ऐसे पू. महाराजश्री बिना बोले मूक भाषा में आशीर्वाद दिये । मैं घर आया । रोग के सभी चिन्ह जाते रहे । गोली अब पेट में पचने लगी । २० दिन तक अच्छा रहा । पुनः शरीर टूटने लगी । बुखार पुनः आने लगा । महाराजश्री के शब्द याद आये कि थोडे थोडे दिन पर समाचार देते रहना । इस आज्ञा के अनुसंधान में भगवान के दर्शनार्थ मंदिर गया ओर महाराजश्री का दर्शन करके कहा कि बापजी ? १२ दिन से बुखार उतरता ही नहीं है । शरीर टूट रही है । तब महाराज श्रीने कहा कि दवा नियमित लेते है ? कौन डोक्टर हैं ? शालिग्राम भगवान के अभिषेक का जल नियमित ले रहे हैं । हां बापजी । अच्छा, ऐसा मूक आशीर्वाद । बाद में घर आया बुखार तुरन्त उतर गया । २ महीने के बाद प्रातःनूतन वर्षाभिनंदन करने हेतु मंदिर में महाराजश्री के पास गया । महाराज श्री ने पूछा तो, मैंने बताया कि बापजी अब सभी रिपोर्ट नोर्मल हो गया हैं । ऐसा ? बहुत आनंद हुआ। बापजी । आपका आशीर्वाद ।

प्राकृत मनुष्य नहि सोई,
धर्मवृध्धि हित द्विज गये देवा ।
करन श्री कृष्ण देव की सेवा ।
मुक्तानंद के प्रभु सुखदाता ,
धर्मवंश कियो अति विरमाला,
धर्मवंशी के शरण जो आवे,
पापी जीव पुनीत होई जावे ।
जब शरणागत होवत जंता,
ताहि मिलावत श्री भगवंता ।
रीढे तेने श्री हरि,
जेने धर्मकुल मां हेत ।
ते धर्म मां रही भजे,
अवतरे कुटुंब समेत ।
ते माटे ए धर्मकुलना,
आश्रित जे कोई होय,
अंत समय श्रीकृष्ण तेनी,
करशो आप सहाय ।
अति विकट यम त्रासथी,
मुकावशे भगवान ।
अंत समय श्रीकृष्ण पोते,
देशे दर्शन दान ॥
तेमज संसृति चक्रथी,
मुकावशे व्रजचंन्द्र,
ते भक्त ने निजधाममां,
पहुंचाडशे सुखकंद ।
एज अमारा वचन नो,
दृढ राखजो विश्वास,
मुक्तानंद नो प्रभु कहे,
तमे अति अचल हरिदास ॥

कडवु १२८ धर्माख्यानम्,
मुक्तानंद काव्यम् ।

इष्ट देव पूर्ण पुरुषोत्तम स्वामिनारायण भगवान के वचन की

अनुसंधान पृष्ठ नंबर २०

बापूनगर मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव अंतर्गत श्रीमद् भागवत पारायण आधारित बीने गये मोती

वक्ता : प.पू. सदगुरु शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)



भगवान की शरण में जो जाता है उसे मृत्यु का भय रहता नहीं है। जिसे सुख चाहिए, जिसे शांति चाहिए, जन्ममरण से छूटना हो, भगवान के धाम में जाना हो उसे अशरशरण ऐसे भगवान पुरुषोत्तम नारायण की शरण में निष्कपट भाव से जाना चाहिए।

अनीति का, हक विना का, द्रव्य घर में हो तो वह सुखी नहीं रह सकता और परमात्मा तक पहुंच नहीं सकता। उसके विचार अच्छे नहीं आ सकते। रास्ता में मिलाधन भी अपना नहीं कहलाता है। परमात्मा के लिए अर्पित किया जानेवाला दशवां, वीसवां भाग भी अपने अंशका नहीं होता है। वह परमात्मा का है। वह दान भी नहीं है। भगवान स्वामिनारायण ने आज्ञा किया है कि, जो हमारे आश्रित हैं वे जिस देश में रहते हों उसी देश में दशवां, वीसवां भाग भगवान को अर्पण करदे। दशांस, वीशांस अर्पण करने से धन परिमार्जित हो जाता है, बाद में उसे जीवन में लाना उचित है, बचे में से दान करना श्रेयष्कर है। धर्मादा करें अपनी फर्ज में आता है। लोभ छोडकर यदि धर्म किया जाय और अवशिष्ट द्रव्य से सत्कर्म किया जाय तो निश्चित ही अक्षरधाम की प्राप्ति होती है। दूसरे का द्रव्य, या धन घर में नहीं आने देना चाहिए। किसी का न्यास भी नहीं रखना चाहिए। दूसरे के हक का द्रव्य यदि घर में आयेगा तो निश्चित ही मानसिक शारीरिक आर्थिक रूप से कही न कही परेशानी खड़ी रहेगी। बिना परीश्रम का, मामाका, मौसीका, वारिस का ये सभी धन बिना हक के होते है, इससे बुद्धि बिगड़ती है, इस धन को मंदिर पहुंचा देना चाहिए। शतानंद स्वामीने गरीब की व्याख्या करते हुए कहा है कि जिसके एकजोड़ी से अधिक पहनने का कपड़ा न हो, न मिलता हो उसे वीशांस धर्मादा करने को कहा गया है। इसके अलावां दशांस दान करने का विधान है। ज्ञान प्राप्त करना है परंतु गुरु न किया हो तो भगवान का परिचय कौन करायेगा। गुरु ऐसा होना चाहिए जो समर्थ हो। जो भगवान को पहचान करा सके। व्यवहार में लगावे, माया में लगावे, अपने में जोडे, ऐसे गुरुसे किसी का कल्याण नहीं हो सकता। ऐसे गुरुओं की संसार में कमी ही नहीं है। जैसे देश के बाहर जाने के लिए उस देश के वीजे की जरूरत पड़ती है, उसी प्रकार भगवान के धाम में जाने के लिए उसी रूप को पहचान कर भक्ति-उपासना की जरूरत पड़ती है। सर्वोपरि अक्षरधाम में जाने के लिए सर्वोपरि पुरुषोत्तम नारायण की उपासना करनी चाहिए। भगवान प्रसन्न कैसे हों इतना भी यदि आ जाय तो कुछ करने की जरूरत रहती नहीं है। भगवान की जिसके ऊपर कृपा हो गयी है वे निश्चित भगवान के धामके अधिकारी हो जाते हैं।

मोक्ष प्राप्त करने में अपना स्वार्थ है यह भजन से सम्भव है। इस में भगवान का या साधु महात्मा किसी अन्य का

कोई स्वार्थ नहीं । जगत के जीव को प्रसन्न करना हो तो आकाश पाताल एक कर डालिये तो भी वे प्रसन्न नहीं हो सकते । जीव का यह स्वभाव है । भगवान को प्रसन्न करें तो सारी दुनियां प्रसन्न हो जाय । मेरा पन का ममत्व रहे तो तप नष्ट हो जाता है, वैराग्य नष्ट हो जाता है । ममत्व दूर होने से देहासक्ति दूर हो जाती है ।

जगत की ऐसी कोई ताकत नहीं है जो भगवान के भक्त को परेशान कर सके । काल, कर्म, माया का भी उस पर भार नहीं रहता है । भक्त भगवान की आज्ञा का जितना लोप करता है उतना ही दुःख होता है, आज्ञा पालन में सुख होता है ।

शरीर को चाहे जितना पोषण देकर, शक्तिशाली बनाया हो लेकिन आत्मा को बलवाननहीं बनाया हो तो सुख नहीं मिलता ।

स्वार्थी मनुष्य दूसरे की प्रशंसा करते फिरता है । प्रसंशा से व्यक्ति फूल जाता है । और यह भी मानना चाहिए कि वह खडढे में गिर रहा है । जिसके मस्तक पर भगवान का चिन्ह नहीं हो, उसका मस्तक तावे जैसा कोरा होता है । जिसके मुख में भगवान का नाम न हो, मुखमें षडक्षरी मंत्र न हो, भगवान के सामने जिसने कभी हाथ नहीं जोडा हो, गले में कंठी न हो, इससे बढकर कोई अपशकुन कुछ नहीं हो सकता । बिल्ली जैसा प्राणी जो निर्दोष है, उससे क्या अपशकुन हो सकता है । कपाल में तिलक चन्दन हो तो, कपाल कितना सुन्दर लगता है । गर्भ में जब बालक आता है तब मां जैसा विचार करती है, जैसा खाती है, जैसा आचरण करती है वैसे बालक को जन्म देती है । माता-पिता यदि सावधान हों तो बालक सद्‌गुणी होता ।

भजन करने योग्य तो एकमात्र भगवान ही हैं । उन्ही का भजन करे, दूसरे का नहीं । जीव की रक्षा करने वाले एकमात्र भगवान ही हैं । भगवान की इच्छा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता । जिसके रक्षक भगवान हो, उसका बाल बांका भी कोई नहीं कर सकता । संतपुरुष आशीर्वाद दिये हों लेकिन किसी भगवान के निर्दोष भक्त का अपराध हो गया हो तो आशीर्वाद निष्फल हो जाता हैं । भगवान का भक्त इतना प्रिय होता है कि भगवान स्वयं कहते हैं कि मेरा हाथ भी यदि मेरे भक्त का द्रोह कर दिया हो तो मैं अपने हाथ को काटकर फेंक दूं । तो दूसरे की क्या बात ।

संसार सागर का जहाँ मंथन होता है वहाँ क्लेशनाम के विष की उत्पति होती है । क्लेश को बाहर किया जाय तो कुटुंब परेशान होता है, अन्दर उतारा जाय तो अपना ही नाश होता है । शिवजी जैसे समुद्र मंथन में से निकला हुआ विष अपने कंठ में धारण किये, इसी तरह गृहस्थों को संसार क्लेश को कंठ में धारण करना चाहिए ।

पैसा देखकर लोग मित्र बनने आते हैं । सम्बन्धी बनने आते हैं । इसी का नाम दानव है । कोई सत्कर्म करता हो, दान करता हो, उसमें अन्तराय आवे तो दूसरे जन्म में या इसी जन्म में अन्धा होता है, या एक आंख चली जाती है । शुक्राचार्य जैसी स्थिति होती है ।

किसी को धन का, शक्ति का, संपत्ति का, ज्ञातिका, विद्या का, ज्ञान का, वैराग्य का या सत्ता का इस प्रकार कीसी भी प्रकार का मान, अभिमान हो तो वह मनुष्य भगवान को प्रिय नहीं लगता है । अभिमानी के छप्पन प्रकार का भोग हो तो भी भगवान स्वीकार नहीं करते हैं । उसके सामने भी नहीं देखते । जहाँ प्रेम, श्रद्धा, भक्ति हो उससे अर्पित पत्ता, सूखी रोटी या कुछ भी हो उसे परमात्मा स्वीकार करलेते हैं । लाज जब से हरगयी तब से दुनिया में जाने क्या हो रहा है । शील, चारित्र्य भारत की संस्कृति है । भगवान को मिलने के लिए कोई पग भी आगे बढाता है तो भगवान उसकी तरफ सात हजार पग आगे बढकर आते हैं । संसार की आसक्ति वासना, मोह, ममता, माया छोडना पडेगा । अहंकार, मान, संमानछोडना पडेगा संसार का जीव जगत के नाशवंत पदार्थों की माया नहीं छोड़ता । माया का पोटला साथ रखता है । परिणाम स्वरुप उसे माया ही मिलती है भगवान का धाम नहीं मिलता । भगवान को छोड़कर नाशवंत पदार्थों में जीव फंसता है तो भगवान को वह पसंद नहीं है । जगत के जीव को धन संपत्ति जो कुछ मिलता है वह परमात्मा की कृपा से मिलता है । अपनी मेहनत को भगवान के साथ जोड़दे तो परमात्मा उसे सुखी कर देते हैं । लेकिन कीसी को परमात्मा का आश्रित होना नहीं है । भक्ति की भूमि में जब मनुष्य प्रवेश करता है तब परमात्मा को आगे करता है । परंतु जब उसके पास धन-सम्पति आजाती है तब खुद आगे चलने लगता है । परमात्मा को पीछे कर देता है । दंभ, आडम्बर, कपट करने वाला अघासुर है । दुराचार, हिंसा, व्यभिचार इत्यादि बन्द करे तो अधासुर जीताजा सकता है । बाद में

बकासुर आता है - अपने में कुछ दैवत्व नहो, परन्तु ध्यान, माया का दंभ करे मैं तो यह करता हूँ मैं तो यह करता हूँ चारो तरफ कहते हुए फिरता है । शिक्षापत्री की आज्ञा मे रहना न हो, मर्यादा में रहना न हो, लेकिन बड़ी-बड़ी बाते करनी हो इसी को दंभ आडम्बर कहते है ।

जिस में विश्वास, श्रद्धा, प्रेम न हो उसके आगे भगवान आगे आकर खड़े हो जाय तो भी उसे सुख मिलने वाला नहीं है ।

पतिव्रता स्त्री से बड़े-बड़े देवता भी डरते रहते है और वह पूजनीय होती है । पतिव्रता के धर्म से यश, कीर्ति, धन, संपत्ति सब कुछ मिलता है ।

कितने तो यह भी कहते है कि हमें तो भगवान समाधि मे प्रतिदिन दर्शन देते है । बात करते है । ऐसा अभिमान आवे तो भगवान वहाँ अदृश्य हो जाते है ।

भगवान के नाम स्मरण से, चरित्र का श्रवण करने से जीवन के पाप जलजाते हैं । भगवान तक पहुंचने की पात्रता आजाती है । यज्ञनारायण के धूंए का जो दर्शन करे तो उसके जन्म जन्मान्तर के पाप नष्ट हो जाते है । यज्ञनारायण का दर्शन, प्रदक्षिणा, करने से जैसे सभी अग्नि में जल जाता है वैसे ही मनुष्य के पाप नष्ट हो जाते है ।

लाला के वियोग में जिसका प्राण रुका न रहे ऐसा गोपियाँ का प्रेम है । मरना न हो इसके लिए जगत का जीव कितना प्रयत्न करता है । जन्म लेना है लेकिन मरना नहीं है । जन्म लेना बन्द हो तो मरनाभी बन्द हो जाय । जगत की आसक्ति वासना, छोड़कर परमात्मा की आराधना रुके तो जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाय । परमात्मा के स्वस्म में प्रेम उत्पन्न हो तो दुःख दूर हो जायेगा । कंस को भी ऐसा ही मार्ग मिल गया था ।

हवन-पूजन-जप-तप-तीर्थ इत्यादि का पुण्य कम हो सकता है । लेकिन परमात्मा की भक्ति-प्रेम किया हो तो कभी कम नहीं होगा । किसी आवश्यकता पर आवश्यक वस्तु देना देने वाला का कर्तव्य है । घर बैठकर लोग टी.वी. देखकर समय बिताते है । परंतु मंदिर में भगवान की आरती के दर्शन का समय नहीं मिलता है । भगवान इतने दयालु है कि जीव के दोष को अपनी डायरी में नोट नहीं करते । जिसने जगत के तिरस्कार को सहा है, फिर भी परमात्मा की भक्ति की हो तो उसके घर परमात्मा जन्म धारण करते है । जीव की ऐसी प्रकृति हो गयी है कि चारो तरफ से मान-सन्मान चाहिए, नहीं मिले तो परमात्मा को भूल जायेगा । मंदिर में आना बन्द कर दे । परमात्मा को अंतःकरण में नित्य रखाजाय तो दुष्कर्म नहीं होगा । समाज की सेवा करनी हो तो सिंहासन पर नहीं बैठो । सत्ता, सिंहासन आते ही सेवा भाव भूल जाता है । केवल दंभ और आडम्बर रहजाता है । देश की राष्ट्र की सेवा करने वाला सैनिक बनता है । जैसे धनुष में से छूटा हुआ बाण वापस नहीं आता है मनुष्य के मन को तोड़ डालता है । कांच को जोड़ा नहीं जा सकता है । इसी प्रकार टूटा हुआ मन भी जोड़ा नहीं जा सकता । इस लिये बहुत विचारकर बोलना चाहिए । किसी सत्य या खराब वस्तु की सही पहचान केवल परमात्मा को होती है । एक का सही करने में दूसरे का बिगाड नही होना चाहिए यह ध्यान रखना चाहिए । भगवान स्वामिनारायण का आश्रित बोलकर भी बाणी से द्रोह नहीं करना चाहिए । किसी को खराब कलंक नहीं लगाना चाहिए ।

वृद्धावस्था में संसार से जीव थकजाता है । परमात्मा की तरफ देखे तो परमात्मा उसे रास्ता बताते हैं । वृद्धावस्था में जीव पुत्र, पत्नी तथा अन्य आत्मीयजनों से तिरस्कृत होता है लेकिन मंदिर में नहीं आता आत्महत्या करने वाला जीव अन्धतामिस्त्र नामक नरकमें जाता है ।

विजय हो तो जीव परमात्मा की तरफ देखता है । भगवान ने शरीर, दृष्टि-सभी दिये है जिससे सभी कार्य सरलता से सम्पन्न होता है । किन्तु जब उसे ऐसा होता है कि मैंने ही किया है तब उसका पतन होने लगता है । जिसके जीवन में भगवान का आगमन हो गया है वह वृद्धावस्था को जीत लेता है । दुष्ट बुद्धिवाला - दुराचार, दारु, जूआ, व्यभिचार में पैसा लगाता है । कामक्रोध, लोभ इत्यादि अन्तः शत्रु तथा विकार जीव को परेशान करते हैं । उसी के सामने लडाई लड़ता है । लेकिन अपनी शक्ति से जीतना बडा ही कठिन है । कोई चान्द्रायण व्रत करे या तप करे तो भी परमात्मा की शक्ति के बिना जीत नहीं सकता । स्वामिनारायण भगवान अपने दृष्टांत से ही बात करते थे । अन्तः शत्रुओं को जीतना कठिन है तथापि नरनारायणदेव का आश्रय ग्रहण करने से जीतना सम्भव है ।

शक्ति, समृद्धि तथा सत्ता ए तीनो वस्तु जहाँ एकत्र हो वहाँ उच्छृं, खलता तो अवश्य आती है । देव, आचार्य, संत, शास्त्र, का जो योग रखेगा, सेवा करेगा, उसे अक्षरधाम अवश्य मिलेगा ।

एक अनुपम पत्र-निरुपण

– अतुलभाई भानुप्रसाद पोथीवाला

जैसे की चिठ्ठी परदेश से आयी हो उसे वांचकर लिखने वाले की याद आ जाती है । जैसे पांच पांडव, द्रौपदी, कुन्ती, रुक्मिणी सत्यभामा, जांबवती इत्यादि भगवान की पटरानियां एवं सांब भगवान का पुत्र इत्यादि का रूप तथा वचन शास्त्रो में लिखा हुआ है । ऐसे शास्त्रों का श्रवण या पठन करने से उस रूका स्मरण हो आता है । उनके ज्ञान का भी ख्याल आ जाता है । (पं. १)

सं. १८७७ फाल्गुन शुक्ल ४ के दिन पंचाला गाँव में झीणाभाई के दरबार में सभा चल रही थी । उस सभा में श्रीजी महाराज उपरोक्त वचन कहे हैं ।

पत्र वांचकर लिखने वाले की बुद्धि का ख्याल आ जाता है । पत्र सुनकर वर्णित विषयों का मानो प्रत्यक्ष दर्शन होने लगता है । ऐसा ही एक अनुपम पत्र है "निलकंठ वर्णीने पू. रामानंद स्वामी को लोज गाँव से एक पत्र लिखा –

शतानंद मुनि ने सत्संगिजीवन प्रकरण-१ के ५४ वे अध्याय मे स.गु. निष्कुलानंद स्वामी भक्त चिंतामणी के प्रकरण ४२ वें में इस अनुपम पत्र का वर्णन किया है । एक गद्य दूसरा पद्य दोनो के कर्ता भी अलग-अलग हैं । फिर भी दोनों के हार्ध में सांगोपांग समरूता है ।

"हमारे बडे गुरुभाई मुक्तानंद जैसे दर्शन करने योग्य हैं । यदि पधारें तो काम हो जाय, यदि नहीं आवें तो मेरा हठाग्रह नहीं है । स्वामी को यहाँ बोला लाऊ" । गुरुभाई का इस प्रकार ईर्ष्या रहित पत्र सुखानंद स्वामी के पास नीलकंठवर्णी ने सुना और प्रभावित हो गये । ऐसे संत का दर्शन करने हम अवश्य आयेंगे । ऐसा कहकर नीलकंठवर्णी तुरंत तैयार हो गये । आश्रम में आकर सभी संतो से मिले ।

उस समय स.गु. रामानंद स्वामी भुज पधारे हुए थे । गुरु की आज्ञा के बिना



मिलने जाना ठीक नहीं था । इसलिए प्रथम पत्र लिखे –

सद्गुरुरामानदं स्वामी को नमस्कार करके मुक्तानंद स्वामी पत्र में लिखते हैं ।

यहाँ कोशलदेश से कोई महान मुनि वर्य आये हुए हैं । इस नीलकंठ नामधारी के तप के आगे हम सभी का तप सूर्य के सामने दीपक जैसा लगता है । मुनि जब प्रश्न करते हैं तब छोटे प्रश्न का उत्तर बडे विद्वान संतो की भी बुद्धि कुंठित हो जाती है । और सभा शून्यमय बन जाती है । लेकिन इस मुनि से विद्वानों द्वारा शास्त्रीय प्रश्न पूछे जाने पर पलभर में उत्तर मिलजाता है । यह कोई देव हैं या आप स्वयं इस मुनि के वेश में हम सभी की परीक्षा लेने के लिए पधारे हुए हैं । हे गुरुदेव ! इस तपस्विवर्य को आप से मिलने की तीव्र इच्छा है । आप की आज्ञा हो तो इस तपस्वी को वहाँ आने दूँ । अथवा आपकी जैसी अज्ञा हो वैसा हम करेंगे ।

पत्र लिखने के बाद मुक्तानंद स्वामी वर्णिराज को कहते है कि आप भी कुछ लिखिए ।

यह सुनकर नीलकंठवर्णी ने अपने स्वर्णाक्षरो से लिखना प्रारंभ किया ।

स्वस्ति लक्ष्मी से सुशोभित ऐसे भुजनगर में राजाधिराज की तरह जिस का चरण कमल सेवित है तथा अनेक सद्गुणों के मनोहर महामणियों से जिसका वेश रचा गया हैं ऐसे साधुपुरुषों के गुरुतथा अपनी दृष्टि मात्र से जिसने भय खींच लिया है ऐसे उदार कीर्ति वाले आपने पृथ्वी पर श्रीकृष्ण की भक्ति को खूब बढाया है, जिससे आपकी जयजयकार हो रही है ।

हे विभो ! अपने सगे संबंधियो को छोड़कर कोशल नामक अपने देश का त्याग कर तीर्थो में घूमते हुए यहाँ लोज नामक गाँवमें आपके आश्रित संतो के साथ रह रहा हूँ । और इसी जन्म में भगवान के साक्षात् हेतु चातुर्मास में आदर पूर्वक धारणा पारणा करता हूँ । कार्तिक मास में कृच्छ्रव्रत और माघमास में चान्द्रायण व्रत करता हूँ । मैं भगवान की प्रसन्नता के लिए व्रतो में मुख्यव्रत एकादशी व्रत नित्य करता हूँ । हे अतुल प्रभाव वाले मुनिवर्य ? इन्द्रियों से सम्बन्धित पंच विषयों का त्याग करके मैंने अपनी शरीर को सुखा दिया है, जिसमें केवल हाड-पिंजर शेष वचे हुए हैं । मेरा प्राण तो केवल आपके दर्शन के लिए लालायित हैं ।

हे विभो ! अष्टांगयोग के अभ्यास से मेरी शरीर की सभी क्रियाये होती हैं । ऐसा जानकर की मैं श्री कृष्ण का भक्त हूँ आपकृपा करो – मेरे माता, पिता भाई, बन्धु, गुरु, मित्र, सभी श्रीकृष्ण ही हैं । उन्ही श्रीकृष्ण में मेरा अतिप्रेम हैं । कृष्ण भक्ति से रहित मेरा अपना कोई माता

पिता भाई या कोई आत्मीयजन हो तो मैं उसका तत्काल त्याग कर देता हूँ। जैसे विभीषण ने अपने भाई का त्याग किया, भरतजी अपनी माता का त्याग किये, विदुरजी अनपे कुल का त्याग किये, ऋषि पत्नी अपने पति का त्याग की, कृष्ण संग का निषेध करने वाली गोपियां अपने पति का त्याग कीं, अंगराजाभी कष्ट से प्राप्त पुत्र वेन को भी त्याग कर बन में चले गये थे।

यहाँ जो आपके संत है वे हमारे पूजनीय हैं। माहात्म्यज्ञान से युक्त श्रीकृष्ण भक्तिवाले ये संत ही हमारे सर्वस्व हैं। इस लोक में जिसे भगवान में भक्ति नहीं है, भक्तों को जिसका संग नही है उसे हम तो गदहा, कुत्ता, बैल जैसा मानते है। उसके दर्शन मात्र से अपराध होता है। हे विभो ! इस लोक में जो विषय में आसक्त रहते हैं उसमें तथा पशु में कोई हम फर्क नहीं मानते हैं। हे ईश ! स्वर्ग में रहने वाले देव भी मनुष्य जन्म की प्रसंशा करते हैं।

जो उत्तम कुल, रूप, कीर्ति, छोटे गुणों तथा ऐश्वर्य से युक्त हैं तो भी भगवद भक्ति से रहित हों उन्हें हम इन्द्रमणा का फल समझते हैं।

जैसे संस्कार किया हुआ शाक में थोड़ा भी नमक ग्रहण करने योग्य होता है। उसी प्रकार भगवान को भक्ति थोडी भी होतो दूसरे गुण ग्रहण किये जा सकते हैं। तप के फल से महापद को प्राप्त किये हुए ब्रह्मा, इन्द्र रुदइत्यादि देव गण भी मुक्ति के लिए भगवान की ही भक्ति करते हैं। राधा, रमा आदि शक्तियां भी श्रीकृष्ण की सेवा करती हैं।

सत्पुरुष तथा सत्शास्त्र द्वारा भगवान का माहात्म्य जानकर आलस्य का त्याग करके इस पृथ्वी पर उन्ही की भक्ति करता हूँ। श्रीकृष्ण के प्रत्यक्ष दर्शन के लिए लालायित हूँ। इस संसार में कोई सुख देने वाली वस्तु मुझे दुःख मय दिखाई देती है। भगवान का प्रत्यक्ष दर्शन न होने से उन्मत्त जैसे हो गया हूँ। भगवान का दर्शन केवल आपके चरणारविंद की सेवा से संभव है। क्योंकि आप ही एकमात्र जगद्गुरुके रूप में उपदेष्टा हैं। हे उदारकीर्ति वाले ? हे दयानिधि। हे आश्रितजनों के बन्धु। आप जल्दी से कृपा करके मेरी देह गिरने से पूर्व मुझे दर्शन दीजिए।

नीलकंठवर्णी ने सुन्दर अक्षरों मे भक्ति भावपूर्ण शब्दो मे इस प्रकार का पत्र मुक्तानंद स्वामी को दिया। मुक्तानंद स्वामी अपना तथा नीलकंठवर्णी का पत्र लेकर मयाराम भट्ट के साथ भुजनगर भेंज दिये।

मुनिराज रामानंद स्वामी सभा में दोनो पत्रो को वाँच कर गद् गद हो गये और कहने लगे "हमारे प्रभु आ गये।"

भक्त चिंतामणी के ४२ वें प्रकरण में श्रीनिष्कुलानंद स्वामीने भी इस अनुपम पत्र की भावना व्यक्त की है।

सर्व गुण तो शोभे छे त्यारे,
कृष्ण भक्त करे जन ज्यारे।
कृष्ण भक्ति हीन गुण होय,
कृष्ण दर्शन विना छूं घेलो,
स्वामी मेलजो संदेशो वहेलो।
तमारुं दर्शन ज्यारे थाशे,
त्यारे सर्व दुःख मारा जांशे।
माटे कृपा करी दर्शन देजो,
वरहान्धि मां बूड्या बांय ग्रेज्यो।
जेम वर्ते छे पोताने मन,
एवां लख्यां वर्णी एवचन।"

श्रीहरि भी वचनामृत में इसीप्रकार वचन बोलते है।

यहबात हम कहते हैं किसी बुद्धि की कल्पना से नहीं कहते सिद्ध होने की भावना भी नहीं हैं बल्कि यह अजमाई होई वात है, जैसा वर्तन करते हैं वैसा कहते हैं। (ग.अं. ३९)

श्रीहरिने जब से मनुष्य रूप धारण किया तभी से लेकर अन्तर्ध्यान तक की समग्र लीला चरित्र की घटना उपदेशात्मक चित्रित है। चक्रवर्तियों के सम्राट ऐसे श्रीहरि का ठाट तो अलौकिक ही होगा।

जीवन में जब भी अशांति लगे तब शांतचित्त से भक्त चिंतामणी का यहपत्र निरपुण प्रकरण को तन्मय होकर गाने से अलौकि शांति मिलती है इस अर्थ में भी "यह अनुपम पत्र" एक अद्भुत तथा अलौकिक ऐसी श्रीहरि की भेंट है।

निवृत्ति में प्रवृत्ति

समग्र सत्संग जानता है कि अपने निवृत्त प.पू. आचार्य महाराजश्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री अपने निवृत्तिकाल में सम्पूर्ण समय अपने शुभ संकल्प के समान संप्रदाय का अद्वितीय आयोजन "श्री स्वामिनारायण म्यूजियम" (नूतन निर्माणाधीन) के निर्माण तथा संचालन में व्यस्त रहेंगे। यह आयोजन जल्दी से प्रगति के मार्ग पर है।

जिससे अब प.पू. बडे महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्यूजियम के स्थल पर अपनी आफिस में विराजमान होंगे। प्रात :९-०० से ११-०० बजे तक वहाँ ही दर्शन करने का लाभ मिल सकता है।

श्री स्वामिनारायण म्यूजियम
टर्फ स्कूल के सामने, ए.इ.सी. नारायणपुरा के पीछे, नारायणपुरा,
अहमदाबाद. फोन : २७४१९५९७ टीले फेक्स : २७४९९५९७

राजस्थान में उदयपुर जिले के आशीर्वाद समान धरियावद मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

भगवान श्री स्वामिनारायण महाप्रभु ने जगत में सर्वजीव हितावह का सिद्धान्त प्रवर्तित किया जिसका प्रवाह आज भी अविरत जीव कल्याण के लिए बह रहा है। जिस स्वरूप को स्थित करने के लिए १. देव मंदिर २. शास्त्र ३. धर्मवंशी आचार्य की स्थापना करके स्वयं देह त्याग करके अनुगामी के रूप में स्वसंकल्प को पूर्ण कर रहे हैं। श्रीहरिने अपने समकालमें नव मंदिरो का निर्माण कराकर श्री नरनारायणदेव अहमदाबाद में तथा श्री लक्ष्मीनारायण देव वडताल में आदि स्वरूपों की स्थापना की। उसके बाद एकसौ जितने शिखरबद्ध मंदिर तथा चार सौ जितने हरि मंदिरो का निर्माण हुआ।

संप्रदाय का विकास मुख्यरूप से गुजरात या गुजरातियो तक सीमित रहा, अपवाद रूप में निमाण (एम.पी.) खानदेश, राजस्थान में नंद संतो के समकालीन समय में विकसित हुआ था। बाद में गुजरात राज्य के बाहर के राज्यों में भी खूब तेजी से विकसित हुआ। जिसका कारण अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू. धर्ममार्तंड आचार्य श्री १००८ तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का अथक-अविरत पुरुषार्थ है। महाराजश्री की आज्ञा से जेतलपुर मंदिर के महंत शा. आत्मप्रकाशदासजी तथा शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के संत मंडलने राजस्थान के सामाजिक रीति से पीछडे विस्तार धरियावद (जि. उदयपुर राज.) में सत्संग प्रचार का कार्य किया। परिणाम स्वरूप शा. ईश्वरजीवनदासजी ने इस कार्य को बडे ही पुरुषार्थ के साथ सम्हाला। सारंगपुर के हनुमान दादा की कृपा से धरियावद के प.भ. अर्जुनसिंह का सत्संग हुआ। उनके माध्यम से संत कथावार्ता तथा सभा द्वारा दश सत्संगी बनाये। नये सत्संगी बनाने के लिए तथा सत्संग की पिपासा को। पूर्ण करने के लिए धरियावद मंदिर बनाने का संकल्प हुआ। प.पू.ध.धु.आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अहमदाबाद मंदिर के स्कीम कमीटी के प.भ. नटवरभाई सोमाभाई पटेल, प.भ. लालभाई शंकरभाई पटेल, मणीभाई धरमशीभाई पटेल, चौधरी मनप्रीतभाई लवजीभाई तथा लक्ष्मणभाई जोईताराम इत्यादि सभ्यों ने उदार भाव से १॥ एकड़ जमीन मात्र दो लाख की कीमत से सम्पादित करके प.पू. आचार्य महाराजश्रीने पांच शिखरवाला स्थापत्यकला से युक्त मंदरि बनाने की आज्ञा महंत ईश्वरजीवनदासजी को दे दी। थोडे ही समय में ता. २४-५-०२ को शिलान्यास विधि सम्पन्न हुई।

सत्संग प्रचार, फंड, मंदिर का निर्माण कार्य ये तीनो एक साथ प्रारम्भ हुआ। इस कार्य में स्वयं महाप्रभु का सहयोग होने से प्रगति होती रही और केवल दो वर्ष में ही सैंकडो नये सत्संगी बने साथ ही फंड भी सरलता से मिला और नूतन मंदिर पूरण हुआ। इस के साथ भोजनालय कार्यालय, संत निवास का निर्माण करने के बाद मूर्ति प्रतिष्ठा ता. २०-२-०५ को शुभ मुहूर्त में सम्पन्न की गयी। धरियावद गाँव तथा अगल बगल के गाँवो के हरिभक्त धर्मप्रेमी महोत्सव की तैयार तन-मन-धन से किये थे।

ता. १४ फरवरी मंगलवार को प्रातः काल श्रीमद् भागवत पारायण की पोथीयात्रा दरबारगढ से निकाली गयी जिसमें पांचसौ जितने हरिभक्तों ने भाग लिया। कथा के वक्ता शा.स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (पी.पी. स्वामी जेतलपुर) राजस्थान की धार्मिकजनता को हिन्दी भाषा में कथा का सुन्दर लाभ दिया। धरियावद तथा अगल बगल में सत्संग का खूब विकास हुआ है। जिसके फल स्वरूप पाँच हजार जितने हरिभक्तों नें कथा श्रवण का लाभ लिया था। कथा श्रवण में क्रमशः उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी। सात दिनों तक अखिल भारतीय कवि संमेलन, महिला संमेलन, कीर्तन, भक्ति, इत्यादि कार्यक्रम सम्पन्न हुआ था। तीन दिनात्मक महाविष्णुयाग सम्पन्न हुआ। ता. १९-२-०५ के दिन धरियावद में आने के समय प.पू.ध.धु. आचार्यश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री प्रथम डुंगरपुर मंदिर में पधारे। बिगत सौ वर्ष में अपने धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री सर्वप्रथमवार डुंगरपुर पधारे थे। यहाँ सोमपुरा के लोगो को नंद संतो ने सत्संग करवाया था। श्री नरनारायणदेव आदि मूर्तियो को बनवाने के लिए नंद संतो

द्वारा बारम्बार आते जाते रहने से ८५ शिल्पी परिवार उस समय सत्संगी हुए थे। यहाँ पर माणिके चौक में अपना स्वामिनारायण मंदिर आया हुआ है।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री डुंगरपुर से आसपुर भोजनका प्रसाद लेकर सायंकाल ४ बजे आगमन किये। पचीस हजार जितनी जन मेदिनी द्वारा भव्य ऐतिहासिक नगरयात्रा निकाली गयी थी। रास्ते के दोनो तरफ हरिभक्त फूलहार लेकर स्वागत के लिए प्रतीक्षा कर रहे थे। तथा भगवान स्वामिनरायण एवं आचार्य महाराजश्री की जय-जयकार कर रहे थे। क्षत्रिय भक्त २२ बन्दूक की सलामी द्वारा पू. महाराजश्री का स्वागत किये। पू. महाराजश्रीके चारो तरफ धिरे हुए क्षत्रियों से श्रीजी महाराज के समय के काठी पार्षदो का तादृश दर्शन हो रहा था।

ता. २०-२-०५ के प्रातः ७ बजे मध्य मंदिर में श्रीहरिकृष्ण महाराज श्री राधाकृष्णदेव, दाहिनी तरफ श्री नरनारायणदेव तथा सुखशैया, शिवपरिवार, गणपतिजी, हनुमानजी इत्यादि मूर्तियो की प्राण प्रतिष्ठा विधि, महाभिषेक आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने स्वहाथो से की। महाविष्णुयाग के समाप्ति की आरती, अन्नकूट दर्शन आरती किये। प्रातः ९-०० बजे सभा प्रारम्भ हुई। जिस में १५ हजार जितने भावुक भक्त लाभ लेने उपस्थित थे। जिसमें उदयपुर जिला तथा राजस्थान सरकार के महानुभाव, दैनिक भास्कर ग्रुप के चेरमेन श्री रमेशभाई अग्रवाल, भोपाल से चार्टर्ड प्लेन द्वारा मुख्य मेहमान के रूप में उपस्थित थे। जिन के हाथों से मंदिर का उद्घाटन किया गया था। एक सौ पचास जितने संत, पांचसौ से अधिक गुजराती हरिभक्त प्रसंग पर पधारे थे। राजस्थान के हरिभक्तों की सत्संग में निष्ठा देखकर परंपरा के अपने सत्संगियो में दंडवत करने की मन में इच्छा हो ऐसा थोड़े समय में ही भगवत् भक्ति की भावना प्रेरणादायी है।

प.पू. आचार्य महाराजश्री ने आशीर्वचन देकर नये हरिभक्तों की खूब प्रसंशाकी थी। सत्संग करावे, कथावार्ता करे ऐसे संत हमें बहुत प्रिय हैं। इस प्रसंग का अखबारों के माध्यम से खुब प्रचार प्रसार हुवा जिससे अगल-बगल के १०० कि.मी. में रहने वाले आदिवासी भी दर्शन के लिए उमड पड़े थे। अपने विस्तार में भव्य मंदिर देखकर आश्चर्यचकित हो गये थे। एक को सत्संगी बनाने से ब्रह्मांडको तारने का फल मिलता हो तो यहाँ हजारों संख्या में बने हैं। मंदिर का निर्माण तथा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव के आयोजक महंत शा. ईश्वरजीवनदासजी तथा सहयोगी संतो को तथा दाताओं को प.पू. आचार्य महाराजश्रीने भाव पूर्वक सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे। इस समय धरियावद के प्रतिष्ठित नये हरिभक्त राजेन्द्रभाई ट्रेलर तरफ से आगामी प्रथम पाटोत्सव को करने की घोषणा की थी।

इस प्रसंग पर जेतलपुर, कालुपुर कांकरिया, नारायणघाट, छपैया, नाथद्वारा, जयपुर, इल्हाबाद, मथुरा, मूली, धांगध्रा, धोलका इत्यादि धामों से संत पधारे हुए थे।

(साधु कृष्णप्रकाशदासजी
(के.पी. स्वामी) जेतलपुर महंतश्री।)

पृष्ठ ६ से आगे

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति के मुख से

दर्शन करे तो ही उसका जीवन सार्थक है।

यहाँ पर बडे उत्सव का हेतु है जागृति, मन जब जागृत होता है तब जीव जागृत होता है जैसे शरीर को भोजन की जरूरत होती है। वैसे ही जीव को भजन की जरूरत पड़ती है। भजन जीव का आहार है। शरीर के साथ आत्मा को लगाकर लक्ष्यसिद्ध करना चाहिए। देह तथा जीव को अपना-अपना आहार न मिले तो दोनो दुर्बल हो जाते है।

तीर्थ करना, नाचना, यह सभी शरीर से हो तो आडम्बर या दंभ कहा जा सकता है।

षष्टि पूर्ति हो या शतामृत महोत्सव हो या मूर्तिप्रतिष्ठा हो इन उत्सवो को करने की ताकत मनुष्य में नहीं है। संशोधन करो कौन करता है ये उत्सव? महाराज इन उत्सवों में प्रत्यक्ष उपस्थित रहते है और मार्ग दर्शन देते रहते हैं। महाराज स्वयं अपने उत्सवों का तथा हरिभक्तों का ध्यान रखने हेतु साक्षात् हाजिर रहते हैं तो मूर्ति में क्यों हाजिर नहीं रहेंगे? इसलिये भजन, भक्ति, स्मरण करके महाराज को प्रसन्न करना चाहिए। सेवा, भक्ति से महाराज प्रसन्न होते हैं। हजारो वर्ष या हजारो वारजन्म हो तो भी इस प्रकार के ज्ञान विना मोक्ष संभव नहीं है। इसलिए हर समय नर-नारायणदेव का आश्रय करके जीवका कल्याण करना चाहिए। महाराज आप सभी का हित करें, आप लोगों को सुख दें ऐसी श्री नरनरायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

ब्रह्मचर्य शरीर का सम्राट

- प्रो. महादेव धोरियाणी (राजकोट)

ब्रह्मचर्य शरीर का सम्राट है। ब्रह्मचर्य से बुद्धि तेज और बल बढता है। पूर्ण जीवन वही जीता है, पूर्ण परमेश्वर को वह पता है जो सदाचारी है संयमी है और ब्रह्मचर्य का अष्टांग पालन कता है।

"श्रवणं कीर्तनं केली प्रेक्षणं गुह्य भाषणम्।
संकल्पोऽध्यवसायश्च क्रिया निवृत्तिरेव च॥

अर्थात् - स्त्री की बात सुनना, स्त्री का विश्वास करना, स्त्री का मजाक करना, उसके सामने देखना, गुप्त भाषण करना उसे भोगने का निश्चय करना साक्षात संग करना, युवान या वृद्ध का निश्चय करना यह आठ प्रकार के कार्यो के त्याग द्वारा ब्रह्मचर्य का जो पालन करता है वही नैष्ठिक ब्रह्मचारी है। इस अनुपम और पूर्वाश्रुत अष्टांग ब्रह्मचर्य का पालन मन और इन्द्रियो को जीते बगर नहीं हो शकता।

अपने जीवन व्यवहार में मन का बड़ा स्थान है। मन से हम मनु "मानव" कहलाते है

"स जीवति मनोयस्य मननेन जीवति।"

"तंदुरुस्त शरीर में तंदुरुस्त मन" यह सूत्र प्रचलित है। जितना मन स्वच्छ, शांत और तेजोमय होता है उतना ही शरीर निरोगी रहता है। इसलिए रस इन्द्रियको तो विशेष रुपसे जीतना चाहिए। शुद्ध और सात्विक आहार लेना चाहिए। इसलिए जिसने रस की इन्द्रिय जीती है। उसने मन भी जीता है, परंतु हम मनस्मी समुद्रका विचारस्मी किंमती रत्न भयंकर प्रकार से गवाँ देते है।

"चित मानवनुं छे ना, भंडार भरवा तणो।
बाग छे किंतु ए रुडो खीलववा सुहामणो॥"

देवों का दैवत्व, धार्मिकोका धर्मत्व, साधु पुस्त्रो का साधुत्व, सतियो का सतीत्व और मनुष्यो का मनुष्यत्व ब्रह्मचर्य का आभारी है। और यही सच्चा आभूषण है। ऐश्वर्य का भूषण सुजनता है, शूरवीरका भूषण वीरता है, ज्ञान का भूषण शांति है, कुलका भूषण विनय है, धन का भूषण पात्रदान, तप का भूषण क्रोध न करना, क्षमा का भूषण पराक्रम, धर्म का भूषण निष्कपट है, इस प्रकार सभी का भूषण है, परंतु ब्रह्मचर्य तो सर्व भूषणोत्तम भूषण है। ब्रह्मचर्य का अर्थ क्या है? "ब्रह्म चरति।" चरति अर्थात् व्यवहार करना, आचरण करना, सभी कृति ब्रह्म के लिए हो वही ब्रह्मचारी है।

समुद्र का अवतार जाना जाता है। वह शांतनुं राजा महान समर्थ शास्त्रवेत्ता था फिर भी कामांध बन गंगाजी की शर्त अनुसार आजीवन गंगाजी की बात मानने के लिए बंध जाते है। और पटरानी बनाते है। रानी अपने छ पुत्रो को गंगा में डालने का फरमान करती है फिरभी कामांध राजा को फर्क नहीं पडता! आखिर सातवे बालकको बचाना चाहता है लेकिन रानी बालकको लेकर गंगा में लीन हो जाती है। यह बालक गांगेय (भीष्म) था।

महर्षि वेदव्यास के पिता पराशर मुनि का पतन ज्ञानी ध्यानी और तपस्वी होने पर भी हुआ था। वे विचार शून्य और कामांध बन नदी के सामने किनारे छोडने आनेवाली नाविक कन्या मत्स्यगंधा के पास अंगसंग मांगते है। और आशीर्वाद से भगवान के अवतार स्मी पुत्र व्यासजी का जन्म होता है।

शर्याति राजा की पुत्री सुकन्या को देखकर महातपोधनी धैर्यशील और सहिष्णु च्यवनऋषि भी सुकन्या से विहार करते है। विश्वामित्र का मेनका के प्रति मोह होता है, और शकुन्तला का जन्म होता है।

महानयोगी पांडुराजा को श्राप था कि पत्नी के अंगसंग से मृत्यु होगी फिरभी एकांत में माद्रीका सहवास होते अंगसंग मांगते है। और "सौन्दर्य क्या! जगत क्या! तप ही साथी!" यह सूत्र भूल कर माद्री को कहते है "बना मैं जल बाहर मीन" और मूर्छित होकर मृत्यु को प्राप्त करते है।

कहने का तात्पर्य यह है कि काम बलवान शत्रु है। इस प्रकार स्त्री पुस्त्र के सहवास से ही काम जागता है।

"नन्वग्निः प्रमदानाम् वृत्तकुंभसमः पुमान्।"

अर्थात् - स्त्री प्रसिद्ध अग्नि है और पुस्त्र घी के घडे के समान है। इसलिए ब्रह्मचर्य ही सर्व नीतिमता और सर्वधर्मो की आधारशीला है।

सात्विक और अल्प आहार भी ब्रह्मचर्य की रक्षा में सहायभूत है। सत्संग और संत समागम से अंतर में निर्मल विचार उत्पन्न होते है।

"जैसे बीज में वृक्ष छुपा, अरुचकमक मे आग,
तेरा साँईयाँ तुझमें है, जाग शके तो जाग।"

मौन रहने से मनोबल बढता है और ध्यान से बुद्धि तेजस्वी बनती है। आहार विहार के विषय में जागस्क रहने से तन स्वस्थ रहता है। ब्रह्मचर्य आध्यात्मिक जीवन का आधार है। तदुपरान्त सात्विक तथा पवित्र विचार भी ब्रह्मचर्य का आधार है। खाली मन अथवा खाली मस्तिस्क भूत का घर होता है। एक समय दयानंद सरस्वती को किसी अनुयायीने

अनुसंधान पृष्ठ नंबर १८

विना विचारे न करो

- भीखालाल बलदेवदास गज्जर (अमदावाद)

गंभीरताथी विचार्या विना कार्य कोई न करो, दास भीखुना नाथनो उपदेश ए उर मांही धरो तेमज वगर विचार्युं जे करे पाछळथी पस्ताय।

ऊपर की उक्तियों का याद करके एकबात याद आती है - ढाल की पोल में रहने वाले इन्कमटेक्स एक्षपोर्ट श्री जयंतीलाल बापालाल जो गुजरात के चाणक्य के स्म में जाने जाते थे और अहमदाबाद के अग्रगण्य उद्योगपति के अचरतलाल हरगोवनदास (वगीचावाला) के दामाद होते हैं। इनके बैठक कक्ष में दीवालों के चारोतरफ नजर पड़ते ही ब्रास प्लेट की याद ताजी हो जाती है । जिसके लिए अंग्रेजी में THINK (थींक) विचार की भावना को विचारने वाले के हृदय में चिपकजाता है और विचार मग्न कर देता है।

संस्कृत भाषा के महान कवि कि रातार्जुनीयम् के रचयिता महाकवि भारवी का नाम भारत में जिसका नाम गौरवपूर्ण स्मेण जाना जाता है । वे व्यवहार से अत्यन्त दुर्बल सरस्वती तथा लक्ष्मी आडवेरकी उक्ति को प्रमाणित करदेते। उनके कुटुम्ब को अन्त से रहित कर दिया गया, परिणाम स्वरुप द्रव्योपार्जन हेतु अन्यत्र उनका मन जाने के लिए नहीं कर रहा था तथापि पत्नी के आग्रह पर अन्यत्र कमाने के लिए चल दिये । उस समय अपनी पत्नी के लिए एकश्लोक लिखकर गये। और कहे कि राजा रजवाडा में कही एकलाख स्मये का पुरस्कार श्लोक पर मिले लो इसे भेंजना ऐसा कहकर द्रव्योपार्जन हेतु निकल गये।

परमकृपालु परमात्मा, भगवान स्वामिनारायणने अपने आश्रितों के लिए शिक्षापत्री मे ३६ वें श्लोक में उपदेश



किया है कि कोई भी व्यावहारिक कार्य (धर्मकार्य सिवाय) विना विचारे जल्दी नहीं करना "उतावल में आम नहीं पकता" पति के आज्ञानुसार उनकी पत्नी भी उस श्लोक को लेकर राजा रजवाडा में घूमने लगीं थी । अगाध परीश्रम के बाद एकराजाने अपने राज्य के पंडितों की सलाह के अनुसार सवालाख में वह श्लोक लेकर अपने शयन कक्ष में एवं बैठक स्म में वांचाजा सके इस प्रकार दीवाल में लिखवा दिया।

समयजात नहिं लागहिं बारा, समय के साथ कभी याद भी विस्मृत हो जाती है। अपने राज्य के विकासहेतु वह राजा प्रस्थान किया। वर्षो वीत गये और अपने कार्य को सिद्ध करके स्वदेश वापस आगये । अपनी पत्नी रानी को विस्मयात्मक संकल्प करके स्वदेशागमन का समाचार विना दिये अर्धरात्रि में शयन गृह में प्रवेश किये। उस समय बाहर से देखने में लगा कि रानी किसी पुरुष के अंगूठे को मुंहमें डालकर सोई हुई है इस प्रकार रानी को सोई होई देखकर अन्य का अनुभव हुआ था लेकिन वह कोई पुरुष नहीं था बल्कि उसकी कुंवारी बेटी थी। जो युवावस्था में होते हुए भी पुरुष के वस्त्र को पहननेकी शौख थी । उसके हाथ का अंगूढा पक गया था जिससे असह्य पीडा होती थी । मातृ हृदय होने के कारण अपनी बेटी की पीडा सहन न होने से उसके अंगूठे को अपने मुख में रखलीथी जिससे वह निद्राधीन हो गयी थी । यह दृश्य देखकर राजा को क्रोधकी सीमा नही रही। क्रोध के वशी भूत होकर राजा। अपनी कमर में लटकती तलवार लेकर अपनी रानी तथा सोई हुई पुत्री के ऊपर बार करने जा रहे थे उसी समय शयनगृह में सवा लाख में जो श्लोक लिखा गया था और उसे लिखा दिया गया था। उसी पर राजा की दृष्टि पडी और राजा पीछे मुड़ गये। और दूसरे आराम गृह में जाकर सो गये । प्रातः राजमहल में पधारे। समाचार मिलते ही रानी और बेटी दोनो मिलने आयी। कन्या का प्रेम पिता पर इतना अधिक उभर गया कि जोर से लिपट गयी और अपने अंगूठे के दर्द को भूल गयी। लिपटने से अंगूठा दब गया और जोर से चिल्ला उठी। राजा की दृष्टि उस पर पडी तो राजा दुःखी हो गया और अर्धरात्रि में देखे गये दृश्य का सच्चा ख्याल आ गया। सवालाख में खरीदे गये श्लोक का मूल्यांकन उसके हृदय में हुआ और उसके रचयिता को राज्य में बोलाकर पुरस्कृत करके सम्मानित किया।

भगवान श्री स्वामिनारायण कच्छ देश के तेरा गाँव में सुथार भक्त माधवजीभाई के यहाँ विराजमान थे।

उस समय श्रीजी महाराजने सभी संतो को आज्ञा किये कि पहले से महाराज की आज्ञा के विना कोई मेरा दर्शन करने भीतर नहीं आयेगा। लेकिन हुआ ऐसा कि प्रेमाधिक्य के कारण स.गु. प्रेमानंद स्वामी तथा स.गु. छोटे सुखानंद स्वामी एकाएक श्रीजी महाराज के पास पहुंच गये और दंडवत् प्रणाम करने लगे। श्रीजी महाराज उनको देखने के साथ क्रोधित होकर बोलने लगे। क्यों संतो ? किस की आज्ञा से पधारे। विचाराधीन हुए संत उत्तर नहीं देसके। सुनमुन वही बैठे रह गये। उस समय महाराज के पास डुंगरजी पार्षद खडे थे। उन्हें आज्ञा की, डुंगरजी इन संतो के मस्तक को काट डालो क्योंकि श्रीजी महाराजको तो सिर्फ भक्त की परीक्षा ही लेनी थी। (ऐसी कई लीलाए महाराज परीक्षा लेने के लिए करते थे) डुंगरजी पार्षदने विचारे बगैर "कोई भी कार्य किसी भी परिस्थिति में करना नहीं" ये याद कर महाराज की आज्ञा का अमल करने में विलंब करने लगे। इसलिए महाराज ने भी संतो के लिए की हुई आज्ञा को जानते ही पार्षद डुंगरजी को बुलाया। सुनते ही डुंगरजी वहाँ आ गये और बोले, महाराज ! महाराज ! तब महाराजने कहा - 'भाई आपने क्या किया ?' तब डुंगरजी बोले - 'महाराज आपकी आज्ञा के बारे में विचार कर रहा था। आपकी आवाज सुनके यहाँ आया हूँ।' महाराज ने पार्षद डुंगरजी को उन संतो को योग्य मानसहित ले आने के लिए कहाँ। सब लोंग वहाँ एक दूसरे के गले लगे। सब लोग राजी हो गये। और चारो तरफ आनंद छा गया। देखा THINK का विचार और वर्तन का प्रभाव।

शास्त्रो में ऐसे अनेक प्रसंग मिलते है। ऐसा ही एक प्रसंग देखते हैं।

गौतमऋषी की पत्नी सती अहल्या का दृष्टांत तो बहुत ही प्रचलित हैं। अहल्या में से शल्या और रामचरण रज के प्रताप से शल्या में से अहल्या बनने की बात सभी जानते हैं। उनके जीवन का और इस प्रसंग का आनुसंगित प्रसंग हैं। गौतम ऋषि ने अपने पुत्र चिरकारी को आज्ञा दी : "पुत्र, इस अहल्या को मारडालो। क्योंकि वह अब और जीने के लायक नहीं है।

एक ओर "पिताश्री की आज्ञा" और दूसरी ओर "माता का वध" दोनो ही विरोधाभासी कर्तव्य अमल के बारे में चिरकारी द्विधा में पड गया। क्या करु क्या न करुंइस बारेमें विचार करने लगा। समय विचार के अमल का औषधि है। जब चिरकारी विचार कर रहा था उस समय गौतम ऋषि ने आज्ञा में पुन: विचार करने जैसा लगा और पुत्र को पूछे "पुत्र, क्या किया ?" तब कहा मैं आपकी आज्ञा का अमल का विचार कर रहा था "फिर ऋषि ने पुत्र से कहा "पुत्र तेरी विचारने की बात ने तुझे और मुझे पाप - पिताकी आज्ञा की अवज्ञा और मातृ हृदय में से बचा लिया। और ऋषिने सति अहिल्या को शल्या बनने का श्राप दिया और आगे तो ऊपर बताया ही है।

पृष्ठ १६ से आगे

ब्रह्मचर्य शरीर का सम्राट

पूछा, गुरुदेव ? आप को कामदेव सतता है या नही ? वे हंसते हुए उत्तर दिये हाँ कामदेव आता है लेकिन उसे मेरे निवास स्थान के बाहर खड़ा रहना पड़ता है। क्योंकि वह मुझे खाली कभी देखता ही नहीं, यही ब्रह्मचर्य का रहस्य है। गुरुतत्व का यदि यथार्थानुभव हो जाय तो सामीप्य तथा अन्तर का भेद रहता ही नहीं। गुरु के पास कोई कानूनी सामाजिक या आर्थिक सत्ता नहीं होती। गुरुशिष्य का संबन्ध केवल प्रेम पर निर्भर रहता है। जब तक आपकी निष्ठा, तथा श्रद्धा है तभी तक सम्बन्ध।

प्रीति बहुत संसार में, नाना विधिकी सोय।
उत्तमप्रीति जानिए जो सद्गुरु से होय।

संत का ज्ञान कूपका जल है। जिसकी वाणी अन्दरसे फूटती है। पंडितो का ज्ञान हौज का पानी है, जो बाहर से भराता है। सच्चे संत का दर्शन करना चाहिए उस समय एक-एक पग यज्ञ के बराबर होता है। जब मनुष्य का पतन नजदीक आता है तब संतो का अपमान होता है। परंतु संत सभी पर समभाव रखते हैं। उन्हे मान, अपमान, अपना पराया होता ही नहीं है।

संतों के वचन में एकतत्व दिया रहता है। इसका आधार संतो की वाणी से मिलता है। कर्म के ऊपर भी अधिकार संतो का ही होता है। श्रीमंत होना सरल है, साधु बनना कठिन है।

शास्त्रो नें संतना सूत्रो उडी विवेक बुद्धि थी।
हसीने स्थापवी श्रद्धा, सत्य जाते अनुभवी ॥

गुरुतीन प्रकारके होते है - काष्टस्वस्म, काजग स्वस्म, पत्थर स्वस्म, काष्ठ स्म गुरु उत्तम होते है। संसार स्मी समुद्र को काष्ठस्मी गुरुही तार सकते हैं। कागज स्मी गुरुखुद तर सकते नहीं तो दूसरे को क्या तार सकते हैं। पत्थर स्मी गुरुखुद डूबते है, दूसरे को भी डूबा देते हैं। गुरुनगारा जैसे हैं लकड़ी पडते आवाज करेंगे। अहंकार परिवर्तन का संतो ने उपाय बताया है कि थोडे दिन, थोडे समय, थोडे महीने ऐसे विचार का अभ्यास करो कि - "यहाँ हमारा कुछ नहीं है, जो कुछ मेरा लगता है वह माया है। मै परमात्मा हूँ। यह सब परमात्मा की प्रकृति मे आता है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

मोक्ष की चाभी भूलना नहीं

- शास्त्री हरि स्वामी (गांधीनगर)

प्यारे मित्रो । यह बात ध्यान से सुनना ।

एक विद्यार्थी परीक्षा देने गया । थोडा लेट हो गया जिससे जल्दी में था । परीक्षा खंड में पहुंच गया लेकिन घबडाया हुआ था और रोने लगा । बगलमें बैठे हुए एक विद्यार्थीने पूछा क्यों रो रहे हो ? तब उसने कहा कि मेरी पेन घर भूल गयी । उसने देखा तो उसके पास शर्ट में ही पेन थी फिर तो उसे पेन बताकर कहा अरे ! तुम्हारे शर्टमें पेन तो है, यह देखकर विद्यार्थी खुश हो गया ।

मित्रो । इस बात से आप क्या समझें ? उस विद्यार्थी के पास ही पेन थी; शर्ट मे ही थी । फिर भी भूल गया और दु:खी हुआ । इसी प्रकार आत्यंतिक मोक्ष की चाभी स्वामिनारायण भगवान ने जो दी है उसे हम भूल जांये तो दु:खी होने का समय आया है ऐसा समझना चाहिए । अपने सम्प्रदाय का मोक्षदायी हतिहास हमें प्राप्त हुआ है वह भूल तो नहीं गये ? कौन इतिहास होगा ? तो सुनो ।

"जेने जोइए ते आवो मोक्ष मांगवा रे लोल"

आज से एक सौ इक्यासी वर्ष पूर्व संतो ने खूब जोर शोर से ऐसी खबर की हैं लेकिन मोक्ष नहीं मांगने से मिलती हैं ।

हां जरुर मिलती है । राम राज्य में मागने पर बादल पानी वरसते थे उसी प्रकार सहजानंद स्वामीके आश्रितो को मांगने पर मोक्ष मिलता है । शर्त केवल इतनी की हृदय निर्मल होना चाहिए ।



परम अवतारी पतितपावन श्री स्वामिनारायण भगवान ने इस मोक्ष स्मी सदावत को स्थायी स्म देना चाहते थे; जिस हेतु को साकार करने के लिए गुजरात की भूमि पर अहमदाबाद को सर्व प्रथम पसंद किया ।

आनंद स्वामी को अहमदाबाद में भेंज कर तीन शिखरवाला भव्य मंदिर को तैयार करवाया । वि.सं.१८७८ फाल्गुन शुक्ल तृतीया के दिन प्रात: स्वहाथों से तीन शिखरों में मूर्ति की प्रतिष्ठा की । मध्य मंदिरमें श्री नरनारायणदेव, पूर्व दिशाके मंदिर में श्री राधाकृष्ण देव तथा पश्चिम मंदिर में धर्मभक्ति के साथ अपने स्वस्म को प्रतिष्ठित किया ।

इस समय का हुआ महा महोत्सव, जयजयकार लाखों की जनमेदिनी, भव्य यज्ञ, चौराशी गांवों के ब्राह्मणों को ब्रह्मभोजन सभी सर्वोपरि ही था । अद्वितीय था । श्री नरनारायणदेव की महिमा तथा इन सभी प्रसंगो का वर्णन सतानंद स्वामी ने सत्संगि जीवन के चौथे प्रकरण में २४ से ४२ अध्यायों में विस्तार से वर्णन किया है ।

विचार करो, उस समय के संतो तथा हरिभक्तो के हृदय में कितना आनंद उमडता रहा होगा । संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर अस्तित्व में आया । गुजरात भरमें स्वामिनारायण नाम का प्रथम डंका बजा और फाल्गुन शुक्ल तृतीया का दिन ऐतिहासिक दिन हो गया । मोक्ष व्रत को सदाचालू रखने के लिए अहमदाबाद में प्रथम पाया खोदा गया । जिसमें स्वामिनारायण भगवान की दिव्य यशोगाथा गाती विजय ध्वजाएं आज भी आकाश में लहरा रही हैं । उस दिनका स्मरण करने के लिए आज भी पाटोत्सव मनाया जाता है । शांति एवं सत्वगुण का रंग श्वेत होता है । जीवन का सार शांति तथा सात्विकता में है । हृदय की पवित्र उर्मियों को लेकर प्रभु के पास जाना चाहिए । उसी की प्रतीक -के रुप में पाटोस्तव विधि होती हैं - जिस में दूध से अभिषेक किया जाता है ।

जिस प्रकार श्रीजी महाराज स्व हाथों से तीनो मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठित करके आरती उतारे थे उसी प्कार आज भी श्रीजीपद समलंकृत पू. पाद आचार्य महाराजश्री अपने हाथों से दुग्धाभिषेक करके आरती उतारते हैं । इस दिव्य समय का दर्शन करने तथा सेवा करने जो आते

हैं उन्हे आत्यंतिक कल्याण का अभय वरदान श्री हरिने देही दिया हैं।

कोई भी सुभागी पुरुष श्री नरनारायणदेव को यदि पाटोत्सव कराता है तो उसे शास्त्रों में बताये गये सभी यज्ञों का फल मिलता है। इस लोक में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष तथा परलोक में मोक्ष मिलता है। यहां आकर जो मोक्ष मांगते हैं उन्हे तो मोक्ष तुरंत ही मिलजाता हैं। निष्कुलानंद स्वामी कहते है : ''नहीं उधारनी वातो। प्रेमानंद स्वामीने तो इससे भी अधिक कहा : जेने जाइये तो आवो मोक्ष मांगवा रे लोल।

इस प्रकार मोक्ष सदाव्रत का आरम्भ अहमदाबाद से हुआ। दिगदिगंत में स्वामिनारायण भगवान की जय जयकार होने लगी। ऐसाही सर्वोत्तम दिन फाल्गुन शुक्ल तृतीया का दिन अपने लिए ही नहीं बल्कि जगत के सभी मुमुक्षुओं के लिए तथा धर्य प्रेमी सभी जनता के लिए फाल्गुन शुक्ल तृतीया का दिन ऐतिहासिक दिन है। इसका हम यथार्थ महत्व समझकर हृदयसे भगवान श्री नरनारायणदेव की प्रार्थना इस उत्सव को प्रेम से हर्षोल्लास के साथ मनाकर सुखी बनें।

मित्रो। ख्याल आ गया होगा कि किस मोक्ष दायी इतिहास की बात थी, वह तो आप सभी जान गये होंगे। तो अब ध्यान रखना कहीं पहले विद्यार्थी जैसा न हो जाय। यदि कोई ख्याल दिलानेवाला मिलजाय तो कोई चिन्ता की बात नहीं। अन्यथा अपने पास ही अद्‌भुत प्राप्ति हो और हम परेशान हों।

पृष्ठ ८ से आगे

पू. महाराज श्री द्वारा महाराज की सत्तावाही आवाज

कीमत है। प.पू.तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आपने कहा था कि आप को सत्संग की सेवा अभी और करनी है। महाराज श्रीसे मैने कहा कि कोई सेवा हो तो कहें ? तो महाराज श्री ने कहा कि आप जो लेख लिखते हैं वही सबसे बडी सेवा है।

इस प्रकारका उदाहरण धर्मवंशी आचार्यश्रीमें श्रीजीमहाराज का प्रत्यक्ष स्म प्रगट होता है। उन्हीं के सुख के लिये लिखे हैं। बाकी सद्‌गुरु निष्कुलानंद स्वामीके शब्दो में कहिये तो ....जेवुं जे चितवे जेवा रे, थाय तेवानुं तेवुं ज त्यारे ?''

श्रीजी महाराज स्वयं देव आचार्य स्वस्म में होकर आजभी अनंत जीवों का कल्याण करते हैं। हम तो एक मात्र उदाहरण हैं। श्री स्वामिनारायण भगवान ने ब्रह्मानंद स्वामी, पार्षद वीरभगुजी इत्यादि लोगों की आयु को बढाये थे। भगवान या भगवान के स्वस्म या भगवान जैसे द्वारा विधिका लेख भी टल जाता है। अब नरनारायण देव पीठस्थान से श्रीजीमहाराज प.पू. कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के स्वस्म में हमें सुख प्रदान करेंगे। लेकिन अपने में पात्रता होनी चाहिए।

निष्कुलानंद स्वामी के काव्यों को पूर्व के विशेषांक में लेखकोंने धर्मकुलकी महिमा के विषय में खूब लिखा है। परंतु इस लेख में श्रीजी महाराज ने जिसे ''सत्संग की मां'' कहकर प्रसंशा किये है; ऐसे महान भक्तराज सद्‌गुरुजी मुक्तानंदस्वामी की भाषा में धर्मकुल की महिमा लिखूं तो :

धर्म वंश जश अति सुखकारी,
सुनत पुनीत होत नरनारी।
धर्म वंशी के शरण जो आवे,
सो निज कुटुंब सहित तरीजावे।
पुस्योत्तम श्री कृष्ण मुरारी,
तेहि रक्षत प्रभु भवभयहारी।
धर्म वंश के विप्र हे जोई।

कितना प्रिय हैं। उससे सम्पृक्त एक बात यहां अन्त में लिख रहा हूं। एक वर्ष पूर्व बापूनगर रोड पर प.पू.आचार्यमहाराजश्री एक भक्त के घर पदार्पण किये। पदार्पण का नियत कार्य पूरा हुआ और भक्त ने कहा : बापजी ? इस रूममें अपने चरण रख दीजिए, क्योंकि इस स्ममें अनुकूलता नहीं रहती है। तब उस रुम से विमुखों का फोटा देखकर पू. महाराज श्रीने कहा कि इस दीवाल को पहले पवित्र कराओं बाद में आपका विघ्न दूर हो जायेगा।

श्रीजी महाराज के अपर स्वस्म के एक वाक्यका विवेचन करिये तो हजारों वाक्य वन जायेंगे, इतना गूढार्थ होता है। इस गूढार्थ को समझा जाय तो किसी के घर में या ओफिस में या सिंहासन पर विघ्न की स्थिति आ ही नहीं सकती है।

सत्संग समाचार

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से संपन्न

अहमदाबाद पूर्व विस्तार बापूनगर में सौराष्ट्र से आकर बहुत सारे हरिभक्त वसे हुए है और नये-नये सत्संगी बने है। बहुत पहले अपने बड़े महाराजश्री प.पू. तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने संकल्प किया था कि पूर्व विस्तार में भी एक सुन्दर शिखरी मंदिर बनाया जाय, जिससे सत्संग का पोषण हो सके। पूर्व विस्तार के कितने ही छोटे बडे हरिभक्तों ने अपने प.पू. महाराजश्री को इस संकल्प को साकार करने के लिए तन-मन-धन अर्पित कर दिये जिसके फल स्वरूप भव्य मंदिर का निर्माण हो सका। जिसकी प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव १०-२-०५ से १६-२-०५ तक धूमधाम से सम्पन्न किया गया।

ता. १०-२-०५ के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री ने श्रीमद् भागवत पारायण के शुभारंभ में दीप प्राकट्य करके महोत्सव स्थल पर प्रदर्शन विभाग का उद्घाटन किया। श्रीमद् भागवत पारायण ज्ञानयज्ञ के वक्तापद पर कालुपुर के महंत वेदान्ताचार्य प.पू. सद्गुरु शा.स्वा. निर्गुणदासजीने अपनी विद्वतापूर्ण सुमधुर भाषा में सभी को कथामृत का रसपान कराया। श्रीमद् भागवतज्ञानयज्ञ अन्तर्गत पोथीयात्रा, कृष्ण जन्म, रुक्मिणी विवाह इत्यादि बड़े धूमधाम से मनाया गया। षष्टि पूर्ति महोत्सव में घनश्याम जन्मोत्सव जिस प्रकार मनाया गया था उसी प्रकार यहाँ पर मनाया गया।

ता. १५-२-०५ के दिन स्वामिनारायण भगवान की नगर यात्रा तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री की शोभायात्रा अद्भुत थी। जिसका मुख्य आकर्षण यह था कि शोभायात्रामें श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्य श्री कौशल पटेल (पायलोट ट्रेनर) के सहयोग से आकाश में विमान द्वारा सतत पुष्पवृष्टि होती रही। शोभायात्रा में श्रृंगारित हाथी, घोडा, बैलगाडी, ऊंटगाडी तथा ट्रेक्टर सम्मिलित थे। जिसमें स्वामिनारायण भगवान द्वारा स्थापित नव मंदिरो का तथा धर्मवंशी आचार्य परंपरा का दर्शन प्रदर्शन कराया गया था। हजारों हरिभक्त, असंख्य संत, कलश युक्त मातायें, रास करते हुए असारवा गुरुकुल के बालक, व्रजेन्द्र म्युझिक बैन्ड के साथ श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के सभ्य ढोल बाद्य यंत्रो के साथ धूनि कीर्तन करते हुए चल रहे थे। जिस शोभायात्रा का दर्शन करने हेतु पूर्व विस्तार अहमदाबाद के रोड़ पर मानव मेदिनी उमड़पड़ी थी। जगह-जगह पर भावुक भक्तों द्वारा स्वागत में पुष्प बिखेरे गये।

ता. १६-२-०५ के दिन प्रातः प.पू. महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद हाथों से श्री घनश्याम महाराज की षोडशोपचार विधि से प्राण प्रतिष्ठा की गयी, इसके साथ श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव की मूर्तियों की भी प्राण प्रतिष्ठा हुई। श्री घनश्याम महाराज की मूर्ति के यजमान प.भ. रमेशभाई जी. काछडिया, महोत्सव के मुख्य यजमान पद पर प.भ. रमेशभाई ए. पटेल, मादिर के निर्माण तथा उत्सव की सेवा में समर्पित पद पर प.भ. धीरूभाई जे. सोरठीया तथा यज्ञ को मुक्य यजमान पद पर डॉ. कनुभाई पटेल तथा पारायण के मुख्य यजमान पद पर अ.नि. प.भ. धीरूभाई करसनभाई सुखडिया परिवार ने लाभ लिया था।

महामहिम श्री नवल किशोर शर्मा, मुख्य सचिव श्री पी. के. लहरी भूत पूर्व मुख्य मंत्री श्री केशुभाई पटेल, केन्द्रिय कापड मंत्री शंकरसिंह वाघेला, पूर्व गृहमंत्री गोरधनभाई झणफिया सांसद श्री हरिन पाठक तथा अन्य धारा सभ्य राजकीय महानुभाव तथा अधिकारी गण पधारे हुए थे।

नामांकित कलाकरो के साथ श्री नरनारायणदेव देश के गुरुकुलों के बालकों द्वारा नित्य भजन संध्या, सत्संग डायरा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम, रात्रिकार्यक्रम का आयोजन किया गया था। नित्य नये प्रसाद में मिष्ठान्न भोजन परसा जाता था।

मंदिर निर्माण के समय प.पू. लक्ष्मणजीवनदसाजी तथा शा.स्वा. निर्गुणदासजी की सेवा को ध्यान में रखकर अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने उन्हे सदगुरुकी पदवी देकर एप्रोच मंदिर के महंत को प्रसादी का हार पहनाये थे। मंदिर निर्माण तथा महोत्सव में छोटे-बडे यजमानों को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

अम्बाजी में सत्संग शिबिर का आयोजन

स्वयं श्रीजी महाराज कभी कभी संत-हरिभक्तं की सभा रात्रि में या प्रांतः काल बुलाकर करते थे। श्रीहरि के सातवें वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री सं.

२०६१ पौष कृष्ण-१ की रात्रि में साबरकांठा के यात्रा धाम अंबाजी में प.भ. हरिकिशनभाई की प्रतिदिन की दिव्य सभा में संत तथा युवक मंडल की सभा आयोजित की गयी थी । प.पू. महाराजश्री श्वेत वस्त्र धारण करके श्रीजी महाराज की प्रतिकृति वचनामृत में वर्णित जैसे दर्शन दे रहे थे ।

इस दिव्य सभा में प.पू. महाराजश्री तथा पू. महंत शा.स्वा. निर्गुणदासजी, पू. पी.पी. स्वामी, महंत गुरुप्रसाद स्वामी, को. आनंद स्वामी, प्राणजीवन स्वामी, राजु स्वामी इत्यादि संत सभा में उपस्थित थे ।

सभा संचालन प.भ. उदयनभाई महाराजने किया । प.भ. हरिकिशनभाई ने तथा उनके परिवार ने दो दिन के लिए उनके हीरालक्ष्मी सरस्वती सदन में शिबिर की सुन्दर व्यवस्था की थी । यह परिवार धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन करके धन्यभागी बना था ।

सुन्दर दिव्य सभा में सर्वोपरि श्रीहरि की लीला चरित्रों के साथ सत्संग का बड़ा उत्तरदायित्व तथा बड़े बड़े प्रश्नों का समाधान करना है इस प्रकार भगवान के पुत्र आचार्य महाराजश्री ने सभी को प्रसन्नचित्त से आशीर्वाद दिया था ।

पू. महाराजश्री के साथ युवक मंडल तो मिलता ही है लेकिन यहाँ के नवयुवक मुमुक्षुओं को सेवा तथा धर्म का लाभ मिला जिससे वे धन्य भागी बने । कृपालु ऐसे पू. महाराजश्री प.भ. हरिकिशनभाई तथा उनके परिवार के ऊपर बहुत प्रसन्न हुए थे । कोठारी आनंद स्वामी इस प्रसंगके प्रेरक थे ।

(रमेशभाई दोरडावाळा)

कांकरिया रामबाग मंदिर पाटोत्सव प्रसंग पर ब्राह्मण भोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. पडे महाराजश्री के आशीर्वाद से श्रीजी महाराजके दिव्य प्रसादी तीर्थ स्थान रामबाग कांकरिया श्री स्वामिनारायण मंदिर में चैत्र शुक्ल १० ता. १५-३-०४ के पाटोत्सव प्रसंग पर ब्राह्मण भोजन जिस प्रकार भगवान स्वामिनारायण ने श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा के अवशर पर किया था ठीक वैसे ही उसी के स्मरणार्थ यहाँ भी किया जायेगा । प्रात ६-३० से ठाकुरजीका पाटोत्सव-अभिषेक तथा अन्नकूट तथा १० बजे प्रासंगिक सभा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सांनिध्य में होगा । इसके बाद ब्राह्मण भोजन होगा । जिस का सभी हरिभक्तों को लाभ लेना चाहिए । *(महंत स्वामी श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया)*

मथुरा मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर मथुरा में वसंत पंचमी के दिन शिक्षापत्री का वांचन-श्रवण-महापूजा का कार्यक्रम प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वा. अखिलेश्वरदासजी की प्रेराणा से सम्पन्न हुआ था । महापूजा के मुख्य यजमान प.भ. जयसिंह चित्रोडिया थे । महंत स्वमी सत्संग का सुन्दर माहात्म्य समझाये थे । अगल बगल के हरिभक्त लोग दर्शन-पूजा का लाभ लिये थे ।

(पूजारी सर्वेश्वरदासजी)

अहमदाबाद साबरमती मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से मंदिर में ता. २६-१२-०४ के दिन शाकोत्सव संपन्न किया गया । धनुर्मास में धुनि का आयोजन किया गया था । छोटे-बड़े सभी हरिभक्त एकत्रित होकर ठाकुरजी की थाल एक मास पर्यन्त करते थे । कोटेश्वर गुरुकुळ के संतो की प्रेरणा से प.भ. नारायणभाई पटेल (ट्रस्टीश्री) प.भ. लालभाई आदि अग्रगण्य हरिभक्तं के मार्गदर्शन में हरिभक्तों की बड़ी संख्या में धुनि कीर्तन का आयोजन किया गया । संत उपदेशात्मक प्रवचन किये । *(आर.टी. पटेल श्री नरनारायणदेव युवक मंडळ)*

आनंदपुरा मेउ तथा गोझारिया में सत्संग

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से उपरोक्त गाँवो में २२-१-०५ तथा २८-१-०५ को सत्संग सभा महेसाणा मंदिर के महंत स्वामी नारायण स्वामी तथा महंत उत्तम स्वामी तथा संत मंडलने की थी । बहुतायत में हरिभक्त उपस्थित होकर कथा-सत्संग का लाभ लिये थे । *(हितेन्द्रसिंह)*

डांगरवा (तडपद) गाँव में शिक्षापत्री भाष्य पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अ.नि. प.भ. पुरुषोत्तमदास रामदास पटेल परिवार की गं.स्व. शांता बा के संकल्प से ता. २२-२-०५ से २४-२-०५ तक श्रीमद् शिक्षापत्री का भव्य पारायण शा.स्वा. प्रेमस्वरूपदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ता. २२-२-०५ को पधारे थे । सभी को शुभाशीर्वाद दिये थे । ता. २३-२-०५ के दिन बहनों के आग्रह पर अ.सौ. प.पू. गादीवाला पधारकर बहनों को हार्दिक आशीर्वाददी थीं ।

(कोठारी श्री डांगरवा मंदिर)

चलोडा (जीतबा का) मंदिर

धोलका निवासी सर्वोपरि. मुरलीमनोहर देव श्री हरिकृष्ण महाराज के चलोडा (जीवबा) प्रसादी के गाँव में धोलका के महंत जगतप्रकाशदासजी की प्रेरणा से धनुर्मास मे धुनि-कथावार्ता, भजन, कीर्तन गाँव के हरिभक्तों ने कियां। जेतलपुर से संस्कृत पाठशाळा के संचालक शा.स्वा. हरिओमप्रकाशदासजी तथा विद्यार्थी संत प्रातः उपस्थित होकर आरती, धुनि, कथावार्ता करके सभी को लाभ दिये। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का इस गाँव पर हार्दिक आशीर्वाद है।

(जयंतीभाई पटेल)

मूली प्रदेश का सत्संग वृत्तान्त

मूली मंदिर मे वसंत पंचमी का उत्सव धूमधाम से सम्पन्न

झालावाड के तीर्थभूमि पर श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली में श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज के सांनिध्य में प.पू. बडे आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ सानिध्य में वसंत पंचमी का उत्सव धूमधाम से संपन्न किया गया था।

प्रात ६-३० बजे प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री ने श्री राधाकृष्णदेव का षोडशोपचार से विधि पूर्वक महाभिषेक किया जिसके दर्शन का लाभ सभी को मिला था। इस प्रसंग पर पू. महंत स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी तथा महंत नरेन्द्रप्रसाददासजी की प्रेरणा से तीन दिन तक सत्संग का आयोजन किया गया था । जिसमें महंत स्वा. घनश्यामप्रकाशदास (नारायणघाट) शा. हरिओमप्रकाशदासजी (जेतलपुर संचालक) तथा स्वामी वासुदेवप्रकाशदास (धांगधा) इत्यादि संतोने कथा प्रवचन करके सभाजनों को सत्संग का लाभ दिया था । प.पू. लालजी महाराजश्री ने संत हरिभक्तों के साथ रंगोत्सव किये थे। बहनों को दर्शन सुख देने हेतु अ.सौ. गादीवालाश्री पधारे थे।

पाटोत्सव के यजमान पद पर प.भ. घनश्यामभाई नगीनदास सोनी परिवार ने लाभ लिया था । कोठारी स्वा. जगतप्रकाशदासजी तथा संत मंडलने उत्सव का सुन्दर आयोजन किया था। मूली देश के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा भूली नहीं जा सकती है। सभी हरिभक्तों ने वसंत पंचमी के उत्सव का लाभ लिया था।

(पार्षद भरत भगत)

धांगधा संस्कारधाम गुरुकुल

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा. स्वा. रामकृष्णदासजी की प्रेरणा से शाकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था। जिसमें बड़ी संख्या में हरिभक्तों ने लाभ लिया था। स्वामीने कथा का सुन्दर लाभ दिया था।

ता. १६-१-०५ से २२-१-०५ तक सांख्ययोगी गौरी बाकी स्मृति में श्रीमद् सत्संगिभूषण कथा शा. स्वा. रामकृष्णदासजीने की। इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. दोनो गादीवाला पधारकर बहनों को दिव्य दर्शन का लाभ दिया। कथा का आयोजन सां.यो. गौरीबा की शिष्या कंचन बा तथा उनके शिष्यों ने किया। इस प्रसंग पर गाँवो से हरिभक्त तथा संत पधारे थे। *(प्रति. अनिलभाई दुधरेजीया)*

सूर्यनगर (हड़वद)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर का पाटोत्सव माद्य शुक्ल १० के दिन तथा १२ घन्टे की महामंत्र धुनि हड़वद के श्रीजी स्वस्म स्वामी तथा संत मंडलने की। गाँव के हरिभक्तों ने सुन्दर लाभ लिया। *(तारखुंदिया रमेशभाई)*

रणजीतगढ (हळवद)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ता. १-२-०५ के दिन घनश्यामनगर के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने सभा का आयोजन किया। जिस में सभी ने श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव का वफादार रहना और नियम, निश्चय, पक्ष को रखना, गाँव-गाँव में सत्संग की प्रवृत्ति करना इस प्रकार की सब में प्रेरणाकी भावना भर दी। *(श्री नरनारायणदेव युवक मंडल घनश्यामनगर)*

विदेश सत्संग वृत्तान्त

बुवी मेरीलेन्ड वोशिंग्टन चेप्टर (I.S.S.O.)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी तथा प.पू. बडे महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से १५ वी जनवरी शनिवार की साम को ढाई घंटे की सत्संग सभा, कथा, धुनि, कीर्तन, भजन, नित्यनियम, आरती नियमानुसार की गयी थी। जिसमें हरिभक्त बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। यहाँ पर सभा नियमित स्म से चलती है। *(कनुभाई पटेल)*

पूना श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिरमें धनुर्मास में धुनि, अन्नकोटका उत्सव पूना

के हरिभक्तों ने साथ सहकार के साथ मनाया। बहुत सारे हरिभक्तों ने मंदिर में सुन्दर सेवा का कार्य करके उत्सव को सम्पन्न किया। *(जीतेन्द्रभाई डी. सोनी)*

रांदेर सूरत तथा पालनपुर पाटीया मंदिर

सुरत के रांदेर तथा पालनपुर पाटीया मंदिर में ता. १०-१-०५ तथा २३-१-०५ के दिन हालार प्रान्त के हरिभक्त तथा स्थानिक हरिभक्तों ने सत्संग प्रचार प्रसार के लिए शाकोत्सव करके अगल बगस के भावुकों को उत्तम लाभ दिया। संत और हरिभक्तों ने प्रासंगिक सभा में श्रीहरि की महिमा तथा मूल सम्प्रदाय की विस्तृत जानकारी दी थी बाद में धुनि कीर्तन का सभा को लाभ मिला।

(महेश महेता)

बंशपरम्परागत सभ्यो को सौजन्य

बापूनगर एप्रोच श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा के प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से प.भ. प्रवीणभाई टी. पटेल (श्रद्धा कैसेट कं.) की तरफ से कुल २६ स्थायी सभ्योने १०० रु के हिसाब से २६००/- रुपये की सेवा करके सुन्दर प्रेरणा सत्संग को दी है। प.भ. प्रवीणभाई तथा प्रतिनिधि मंडल प.भ. गोरधनभाई धन्यवाद।

आदि आचार्य प.पू. अयोध्याप्रसादजी महाराजके प्रसादी का बामरोली M.P.

श्री स्वामिनारायण जि मुरेना पो. परीक्षा खडीयाहार फोन नं. (०७५३२) २४२२८५ वर्तमान में दर्शन हेतु बामरोली तक पक्का रोड डामरवाला बन गया है। जिससे वाहन व्यवहार चालू हो गया है। कोई भी दर्शनार्थ आसकता है। ऐसे प्रसादी के स्थान का दर्शन प्रत्येक हरिभक्तों को अवश्य करना चाहिए।

(महंत स्वामी बामरोली)

सेटेलाईट वस्त्रापुर नित्य एकादशी सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से अमदावाद के सेटेलाईट, वस्त्रापुर के विस्तार में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल विगत कई वर्षो से प्रति एकादशी की रात्रीमें ८ से १० "सत्संग" का सुन्दर आयोजन करता हैं। इस विस्तार में रहनेवाले हरिभक्त तथा धर्मप्रेमी भावुक भक्तों को सत्संग का लाभ लेना चाहिए। महीने में एकबार ४ घंटे का समय भगवान श्री स्वामिनारायण के गुणगान में जाय तो सम्पूर्ण महीनें उसकी समरसता बनी रहेगी। *(श्री न.ना.यु. मंडल स्थायी सभ्य एकादशी जागरण)*

: स्थल :

सांस्कृतिक होल शिवरंजनी सोसायटी, १३२ फुट रींग रोड, शेफाली चार रस्ता, अमदावाद-१५.

अक्षरनिवासी संत - हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजलि

मूली मंदिर : श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली के वयोवृद्ध स.गु. को.स्वा. धर्मस्वरूपदासजी गुरुशा.स्वा. बालकृष्णदासजी ता. ३-२-०५ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

अहमदाबाद : अपने श्री स्वामिनारायण संस्कृत पाठशाला के प्रधानाध्यापक पू. श्री वाचस्पति मिश्र के पूज्य पिताजीश्री पारसनाथ मिश्र (वैद्यजी) द्वारका की यात्रा पर घर से यहाँ पधारे थे। संजोगवश ता. १८-१-०५ पौष शुक्ल-९ के पवित्र उतरायण के दिन श्री नरनारायणदेव के सांनिध्य में श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

मुंबई (अहमदाबाद) : अ.सौ. कोकिलाबहन आर. चावडा (ए.सी. खेताड़ी की पुत्री) ता. २२-२-०५ के दिन श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।

गांधीनगर : प.भ. वाघेला हरिसिंह पोपटसिंह (गोधावीवाला) ता. १६-१-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

मोरबी : प.भ. धनजीभाई भोजडियाकी धर्मपत्नी जयाबहन भोजाणी ता. १९-१-०५ के दिन श्रीहरि का स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुई है।

धरमपुरा (भरुच) : अ.नि. सरोजबहन मणीभाई पटेल (लंडन स्ट्रेधामवाला) प.भ. परेशभाई की माताजी श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी १६-१-०५ को हुई है।

अमदावाद (अंबली-बोपल) : प.भ. सेंधालाल करसनदास पटेल (कुंडालवाला) ता. २३-२-०५ के दिन श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए है।





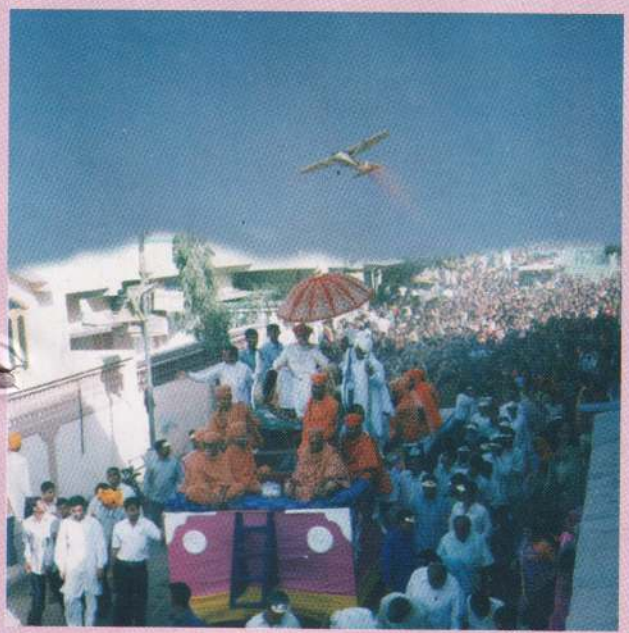
माणेकपुर (चौधरी) तथा महेसाणा श्री स्वामिनारायण मंदिर में शाकोत्सव करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।



माणेकपुर (चौधरी) गाव म प.पू. आचार्य महाराजश्री की आरती उतारते हुए प.भ. गोपालभाई गांडाभाई चौधरी (यु.एस.ए.) तथा परिवारजन ।



एप्रोच - मूर्ति प्रतिष्ठा के यजमान प.भ. प्रवीणभाई नसीतभाई (इन्जीनियर) पटेल का सम्मान करते आशीर्वाद देते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।





एप्रोच मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर कथा श्रवण करते हुए हजारो हरिभक्त



एप्रोच मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर आयोजित भव्यातिभव्य नगरशोभायात्रा में श्रीहरि के सातवे वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ऊपर चार्टर्ड प्लेन द्वारा गुलाब के पुष्पों की वृष्टि की गयी थी । जिसका अद्‌भुत दर्शन ।





श्री स्वामिनारायण मंदिर बीलिया में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर विष्णुयाग में श्रीफल का होम करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ।



श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर बाल स्वरुप घनश्याम महाराज की आरती उतारते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर बीलिया (ता. सिद्धपुर) में मूर्ति प्रतिष्ठा विधि करते हुए प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ।

Praful Kharsani